AKSHANSH PUBLICATION

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर द्वारा आयोजित

लक्ष्य क्लासेज उदयपुर

REET

MAINS EXAM

तृतीय श्रेणी अध्यापक मुख्य परीक्षा

LEVEL-I (कक्षा 1 से 5 के लिए) | Level-II (कक्षा 6 से 8 के लिए)

राजस्थान का इतिहास, कला-संस्कृति एवं भाषा साहित्य

41 जिलों एवं 7 संभाग पर आधारित

भाग-1

विशेषताएँ:

1. संपूर्ण पाठ्यक्रम एवं नवीनतम परीक्षा प्रणाली पर आधारित
2. परिक्षोपयोगी संभावित 2000+ प्रश्नोतरों का संग्रह
3. NCERT एवं RBSE की पाठ्यपुस्तकों पर आधारित पाठ्यसामग्री

इस सीरीज की सभी पुस्तकों को पढ़कर REET को प्रथम प्रयास में आसानी से crack करें

MRP :₹240

सफलता के पथ पर सबसे तेज उभरता हुआ संस्थान
लक्ष्य क्लासेज™

M. 9079798005, 6376491126
Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle, Main Road, Udaipur

श्री आनंद अग्रवाल
निदेशक
लक्ष्य क्लासेज, उदयपुर

दो शब्द...

प्रिय विद्यार्थियों.........

आपके समक्ष राजस्थान अधीनस्थ कर्मचारी चयन बोर्ड (RSSMB) द्वारा आयोजित राजस्थान तृतीय श्रेणी भर्ती परीक्षा (3rd GRADE MAINS) के Level I & II हेतु सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को अलग-अलग भागों **(6 भाग)** के अंतर्गत प्रकाशित किया गया है। इसके तहत **भाग 1 - राजस्थान का इतिहास, कला-संस्कृति, भाषा-साहित्य एवं विरासत** की स्टडी गाइड पुस्तक प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष की अनुभूति हो रही है। यह पुस्तक विद्यार्थियों की आगामी 3rd Grade Mains परीक्षा की तैयारी को मजबूत बनाने और परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के उद्देश्य से लिखी गई है। यह स्टडी गाइड पुस्तक राजस्थान 3rd Grade Mains परीक्षा के लिए गहन अध्ययन की आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुए सम्पूर्ण नवीनतम परीक्षा पैटर्न पर आधारित है।

यह पुस्तक सम्पूर्ण नवीनतम पाठयक्रम को ध्यान में रखकर तैयार की गई है, जिसके तहत राजस्थान का इतिहास, कला-संस्कृति, भाषा-साहित्य एवं विरासत से सम्बन्धित सम्पूर्ण पाठ्यसामग्री दी गई है। साथ ही, इस पुस्तक में सभी अध्यायों के टॉपिक अनुसार महत्त्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का भी समावेश किया गया है। इस पुस्तक को विषय विशेषज्ञों ने अपने विशिष्ट अनुभव व कौशल से तैयार किया हैं। यह पुस्तक राजस्थान 3rd Grade Mains परीक्षा के प्रतिभागियों की आगामी परीक्षा की तैयारी को मजबूत बनाने और सफलता प्राप्त करने के उद्देश्य से लिखी गई है, जिससे वे अपनी तैयारी के लिए एक बेहतर रणनीति तैयार कर सकते हैं।

मार्गदर्शन- लक्ष्य क्लासेज के विषय विशेषज्ञ शिक्षकों के निर्देशन में।
पाठ्यसामग्री निर्माता- राजवर्धन बेगड़, गंगासिंह भाटी और जिज्ञासा गहलोत।

अंततः यह कहा जा सकता है कि यह पुस्तक राजस्थान Grade Mains Level I & II के अभ्यर्थियों के लिए अत्यंत लाभप्रद है।

लक्ष्य परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

आनंद अग्रवाल
निदेशक, लक्ष्य क्लासेज

लक्ष्य क्लासेस ने इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्त्रोतों से प्राप्त किया है। इस पुस्तक में प्रकाशित सभी प्रकार की सामग्री पूर्णतः तथ्यात्मक विश्लेषण पर आधारित है। इस पुस्तक के किसी भी भाग और सामग्री को लक्ष्य क्लासेस की अनुमति और जानकारी के बिना अन्यत्र प्रकाशित या प्रिन्ट करना अनुचित है, यदि ऐसा पाया जाता है तो व्यक्ति या संस्थान स्वयं जिम्मेदार है।

विषय वस्तु

01 राजस्थान का इतिहास

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	प्राचीन सभ्यताएँ	1 – 8
2.	प्रमुख राजवंश, प्रशासनिक एवं राजस्व व्यवस्था	9 – 72
3.	1857 की क्रांति	73 – 80
4.	किसान आंदोलन	81 – 90
5.	जनजातीय आंदोलन	91 – 95
6.	प्रजामण्डल आंदोलन	96 – 103
7.	राजस्थान का एकीकरण	104 – 108
8.	प्रमुख व्यक्तित्व	109 – 115

02 राजस्थान की कला एवं संस्कृति

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	प्रमुख दुर्ग	117 – 128
2.	महल एवं स्मारक	129 – 134
3.	हवेलियाँ, छतरियाँ एवं बावड़ियाँ	135 – 143
4.	मंदिर, मकबरे, मस्जिद, दरगाह	144 – 151
5.	मेले एवं त्योहार	152 – 159
6.	लोक कला एवं हस्तकला	160 – 170
7.	चित्रकला	171 – 176
8.	लोक गीत एवं संगीत	177 – 181
9.	लोक नृत्य एवं नाट्य	182 – 190
10.	लोक देवता एवं लोक देवियाँ	191 – 198
11.	संत-सम्प्रदाय एवं साहित्य	199 – 206
12.	आभूषण, वेशभूषा एवं खान – पान	207 – 214
13.	रीति-रिवाज एवं प्रथाएँ	215 – 221
14.	राजस्थानी भाषा एवं बोलियाँ	222 – 224
15.	राजस्थानी साहित्य एवं साहित्यकार	225 – 235

राजस्थान का इतिहास

कांस्ययुगीन सभ्यता स्थल

कालीबंगा सभ्यता

– कालीबंगा राजस्थान राज्य के **हनुमानगढ़ जिले** का एक प्राचीन एवं ऐतिहासिक पुरातात्विक स्थल है। यहाँ **सिंधु घाटी सभ्यता** के महत्त्वपूर्ण अवशेष पाए गए हैं।
– कालीबंगा को **कांस्य युगीन** सभ्यता माना जाता है।
– कालीबंगा का शाब्दिक अर्थ **'काले रंग की चूड़ियाँ/काली चूड़ी'** है। यहाँ मिली तांबे की काली चूड़ियों के कारण ही इस स्थान को 'कालीबंगा' कहा गया।

खोज एवं एवं उत्खनन कार्य -

– सर्वप्रथम **एल. पी. टेस्सीटोरी** ने कालीबंगा की जानकारी दी थी।
– कालीबंगा प्राचीन **सरस्वती नदी (वर्तमान में घग्घर) के बाएँ तट** पर हनुमानगढ़ जिले में स्थित **नगरीय सभ्यता** थी।
– सर्वप्रथम इसकी खोज **वर्ष 1952** में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (ASI) के निदेशक **'अमलानंद घोष'** द्वारा सिंधु घाटी सभ्यता के स्थल के रूप में की गई थी।
– कालीबंगा में **वर्ष 1961-1969** तक **बी. बी. लाल तथा बी.के. थापर व एम.डी. खरे** के निर्देशन में उत्खनन कार्य किया गया।
– कालीबंगा में **उत्खनन पाँच स्तरों में** किया गया था, जिसे **कालीबंगा I से V** के रूप में पहचाना गया।
– यहाँ से **प्राक् हड़प्पा (प्रथम व द्वितीय स्तर)** और **विकसित हड़प्पा (तृतीय, चतुर्थ व पंचम स्तर)** के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
– **कालीबंगा में वर्तमान समय में तीन टीले प्राप्त हुए हैं-**
  KLB1 – पश्चिम में छोटा
  KLB2 – मध्य में बड़ा
  KLB3 – पूर्व में सबसे छोटा
– कालीबंगा के टीलों पर किए गए उत्खनन कार्य में पश्चिम में स्थित पहला टीला छोटा एवं अपेक्षाकृत ऊँचा है तथा पूर्व में स्थित दूसरा टीला अपेक्षाकृत बड़ा एवं नीचा है।

सभ्यता का काल-

– **कार्बन डेटिंग पद्धति** के अनुसार कालीबंगा सभ्यता का समय **2350** ई.पू. से **1750** ई.पू. माना जाता है।

महत्त्वपूर्ण तथ्य-

– हडप्पाकालीन कालीबंगा **दो भागों** में विभाजित था। पश्चिमी भाग ऊँचाई पर बना हुआ था, जिसे दुर्ग कहा जाता था। इसमें प्रशासनिक भवन बने होते थे। पूर्वी भाग अपेक्षाकृत कम ऊँचाई पर था, जिसे निचला नगर कहा जाता था। दोनों भाग अलग-अलग सुरक्षित प्राचीरों से घिरे हुए थे।
– **डॉ. दशरथ शर्मा** ने कालीबंगा को **सैंधव सभ्यता की तीसरी राजधानी** कहा है।
  नोट- ध्यातव्य है कि सिंधु सभ्यता की पहली राजधानी हड़प्पा तथा दूसरी मोहनजोदड़ो को माना गया है।
– कालीबंगा देश का **तीसरा सबसे बड़ा पुरातात्विक स्थल** है।
– **नोट-** देश के दो बड़े पुरातात्विक स्थलों में राखीगढ़ी (हरियाणा) एवं धौलावीरा (गुजरात) है।
– कालीबंगा को **'दीन-हीन बस्ती'** भी कहा जाता है।
– कालीबंगा में **मातृसत्तात्मक परिवार** की व्यवस्था विद्यमान थी।
– **पाकिस्तान के कोटदीजी** नामक स्थान पर प्राप्त पुरातात्विक अवशेष कालीबंगा के अवशेषों से काफी मिलते-जुलते हैं।
– संस्कृत साहित्य में कालीबंगा को **'बहुधान्यदायक क्षेत्र'** कहा जाता था।
– कालीबंगा सैंधव सभ्यता का एकमात्र ऐसा स्थल है जहाँ से **मातृदेवी की मूर्तियाँ प्राप्त नहीं** हुई है।
– **वर्ष 1961** में कालीबंगा अवशेष पर भारत सरकार द्वारा **90 पैसे का डाक टिकट** जारी किया गया।
- राज्य सरकार द्वारा कालीबंगा से प्राप्त पुरा अवशेषों के संरक्षण हेतु वर्ष **1985-86 में एक संग्रहालय की स्थापना** की गई।

पुरातात्विक साक्ष्य -

– विश्व में **सर्वप्रथम भूकम्प के साक्ष्य** कालीबंगा से ही मिले हैं।
– विश्व में सर्वप्रथम **लकड़ी की नाली** के अवशेष कालीबंगा से प्राप्त हुए हैं।
– कालीबंगा से उत्खनन में **दोहरे जुते हुए खेत** के अवशेष प्राप्त हुए हैं जो विश्व में जुते हुए खेत के **प्राचीनतम प्रमाण** है।
– कालीबंगा में समकोण दिशा में जुते हुए खेत के साक्ष्य और **ग्रिड पैटर्न** की गर्तधारियों के निशान मिले हैं।
– यहाँ से **एक ही समय में दो फसलें** उगाने के प्रमाण प्राप्त हुए हैं जिसमें गेहूँ तथा जौ एक साथ बोये जाते थे।
– कालीबंगा से **कपालछेदन क्रिया** का प्रमाण मिलता है।
– कालीबंगा से **कलश शवदान** के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
– ऐसा माना जाता है कि यहाँ **अंत्येष्टि संस्कार की तीन विधियाँ** प्रचलित थीं, जिसमें पूर्व समाधीकरण, आंशिक समाधीकरण और दाह संस्कार के साक्ष्य मिले हैं।
– कालीबंगा क्षेत्र से **मिट्टी से बना कुत्ता, भेड़िया, चूहा और हाथी की प्रतिमाएँ** मिली हैं।
– कालीबंगा के नगरों की **सड़कें समकोण पर काटती** थी।
– यहाँ के लोग **कच्ची ईंटों से बने मकानों** में रहते थे तथा मकानों की नालियाँ, शौचालय तथा कुछ संरचनाओं में पक्की ईंटों का प्रयोग किया गया है।
– कालीबंगा में एक दुर्ग, बेलनाकार मुहरें, ताँबे का बैल, जुते हुए खेत, सड़कें तथा मकानों के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
– यहाँ का मृद्भाण्ड उद्योग अत्यधिक विकसित था। यहाँ से भागते हुए **बैल की मृण्मूर्ति तथा लाल मृद्भाण्ड**, जिन पर काले व लाल रंग का ज्यामितीय अलंकरण किया हुआ था, प्राप्त हुए है।
– कालीबंगा से **सात अग्निवेदिकाएँ** प्राप्त हुई हैं।
– कालीबंगा में मकानों से गन्दे पानी को निकालने के लिए **लकड़ी की नालियों का प्रयोग** किया जाता था।
– यहाँ से बच्चे की खोपड़ी मिली है जिसमें छह छेद हैं जिसमें **जल कपाली या मस्तिष्क शोध की बीमारी** का पता चलता है।
– कालीबंगा से **मेसोपोटामिया की मिट्टी से निर्मित बेलनाकार मुहर** प्राप्त हुई है।

- कालीबंगा सभ्यता की लिपि सैन्धवकालीन लिपि (**ब्रुस्ट्रोफेदन लिपि**) के समान थी, जो दाएँ से बाएँ की ओर लिखी जाती थी। इस लिपि को अभी तक नहीं पढ़ा जा सका है।
- राजस्थान में कालीबंगा से **विशाल सांडों की जुड़वाँ पैरों वाली मिट्टी की मूर्ति** मिली है।
- **नोट - सोथी सभ्यता-** बीकानेर के आस-पास की सभ्यता को सोथी सभ्यता कहा जाता है। अमलानन्द घोष ने इसे सम्पूर्ण हड़पा सभ्यता का उद्गम स्थल बताया है। इसे **कालीबंगा प्रथम** के नाम से भी जाना जाता है।

बालाथल सभ्यता

- **उदयपुर जिले** की **वल्लभनगर तहसील** के बालाथल गाँव के पास **बनास या बेड़च नदी** के निकट एक टीले के उत्खनन से **ताम्र-पाषाणकालीन सभ्यता** के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- यहाँ के उत्खनन से प्राप्त मृद्भाण्डों, ताँबे के औजारों और मकानों पर **सिंधु घाटी सभ्यता का प्रभाव** दिखाई देता है, जिससे इस सभ्यता से इसके संपर्क के पुख्ता प्रमाण प्राप्त होते हैं।
- बालाथल में 1800 ईसा पूर्व के लगभग ताम्र पाषाणिक सभ्यता तथा 600 ईसा पूर्व के लगभग लौहयुगीन सभ्यता के आबाद होने का पुरातत्वशास्त्रियों का अनुमान है।
- **सभ्यता का काल-** 1900-1700 ई. पूर्व।

खोज एवं उत्खनन कार्य

- इस सभ्यता की खोज **वर्ष 1962-63 में डॉ. वी. एन. मिश्र** द्वारा की गई।
- वर्ष 1993 में **डॉ. वी. एस. शिंदे, आर. के. मोहन्ते, डॉ. देव कोठारी एवं डॉ. ललित पाण्डे** ने इस सभ्यता का उत्खनन किया था।

महत्त्वपूर्ण तथ्य

- बालाथल में उत्खनन से एक **11 कमरों के विशाल भवन** के अवशेष मिले हैं।
- यहाँ से **लोहा गलाने की पाँच भट्टियों** के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- यहाँ के लोग बर्तन बनाने तथा कपड़ा बुनने के बारे में जानकारी रखते थे।
- यहाँ से पाँचवीं सदी ईसा पूर्व का **हाथ से बुना कपड़े का टुकड़ा** प्राप्त हुआ है।
- पत्थर के मनके, पक्की मिट्टी की मूर्तियाँ, पशु आकृतियाँ, ताँबे के औजार।
- बालाथल के उत्खनन में मिट्टी से बनी **सांड की आकृतियाँ** मिली हैं।
- बालाथल निवासी **मांसाहारी** भी थे।
- यहाँ से **4000 वर्ष पुराना कंकाल** मिला है जिसको भारत में **कुष्ठ रोग का सबसे पुराना प्रमाण** माना जाता है।
- यहाँ से **योगी मुद्रा में शवाधान** का प्रमाण प्राप्त हुआ।
- बालाथल में अधिकांश आभूषण व उपकरण तांबे के बने प्राप्त हुए हैं।
- यहाँ के लोग **कृषि, शिकार तथा पशुपालन** आदि से परिचित थे।
- बालाथल से प्राप्त बैल व कुत्ते की मृण्मूर्तियाँ विशेष उल्लेखनीय है।

ताम्रयुगीन सभ्यता स्थल

गणेश्वर सभ्यता

- गणेश्वर सभ्यता **नीमकाथाना क्षेत्र (सीकर) में रैवासा गाँव की खंडेला पहाड़ियों** में स्थित ताम्रयुगीन संस्कृति का महत्त्वपूर्ण स्थल है।
- गणेश्वर सभ्यता **कांतली नदी के किनारे** विकसित प्राक् हड़प्पा कालीन सभ्यता मानी जाती है।
- गणेश्वर को **'पुरातत्व का पुष्कर'** भी कहा जाता है।

खोज-उत्खनन कार्य एवं काल

- **रेडियोकार्बन विधि** के आधार पर इस स्थल की तिथि **2800 ईसा पूर्व** निर्धारित की गई।
- गणेश्वर सभ्यता की खोज एवं सर्वप्रथम उत्खनन कार्य वर्ष 1977 में **रतनचंद्र अग्रवाल** द्वारा किया गया।
- इस सभ्यता स्थल पर व्यापक उत्खनन कार्य **वर्ष 1978-79 में विजय कुमार द्वारा** करवाया गया।

महत्त्वपूर्ण तथ्य

- गणेश्वर को भारत में **'ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी'** तथा **'ताम्र संचयी संस्कृति'** भी कहा जाता है।
- भारत में पहली बार किसी स्थान से इतनी मात्रा में ताम्र उपकरण प्राप्त हुए हैं।
- गणेश्वर सभ्यता के लोग संभवत: **ताँबा खेतड़ी व अलवर की खो-दरीबा खान** से प्राप्त करते थे।
- यहाँ से प्राप्त तांबे के उपकरणों व पात्रों में **99 प्रतिशत तांबा** है, जो इस क्षेत्र में तांबे की प्रचुर प्राप्ति का प्रमाण है।

पुरातात्विक अवशेष

- गणेश्वर के उत्खनन से लगभग **2000 ताम्र आयुध व ताम्र उपकरण** प्राप्त हुए हैं, जिनमें तीर, भाले, सूइयाँ, कुल्हाड़ी, मछली पकड़ने के कांटे आदि शामिल हैं।
- गणेश्वर में बस्ती को बाढ़ से बचाने हेतु वृहदाकार पत्थर के **बाँध बनाने के प्रमाण।**
- ताँबे का बाण एवं मछली पकड़ने का कांटा।
- काले व नीले रंग के कपिषवर्णी मृद्पात्र।
- गणेश्वर से **मिट्टी के छल्लेदार बर्तन** भी प्राप्त हुए हैं।
- मिट्टी के छल्लेदार बर्तन, जो केवल गणेश्वर में ही प्राप्त हुए हैं।
- दोहरी पेचदार शिरेवाली ताम्रपिन।

आहड़ सभ्यता

- आहड़ **उदयपुर नगर/मेवाड़ क्षेत्र** के पूर्व में बहने वाली **आयड़/बेड़च नदी के तट** पर स्थित एक पुरातात्विक स्थल है, जिसका विकास **बनास नदी घाटी** में माना जाता है।
- आहड़ **ताम्रयुगीन सभ्यता** है, जो लगभग **4000 वर्ष पूर्व** की सभ्यता मानी जाती है।
- दसवीं-ग्यारहवीं शताब्दी में इसे **आघाटपुर या आघट दुर्ग** के नाम से जाना जाता था।
- इसे प्राचीनकाल में **ताम्रवती नगरी भी** कहा जाता था। वर्तमान में इसका नाम **धूलकोट (मिट्टी का टीला)** है।
- डॉ. सांकलिया ने इसे **'आहड़ या बनास संस्कृति'** कहा है।
- आहड़ एक **ग्रामीण सभ्यता** थी।

खोज एवं काल

- आहड़ सभ्यता की खोज **वर्ष 1953 में पं. अक्षय कीर्ति व्यास** के नेतृत्व में की गई थी।
- **डॉ. गोपीनाथ शर्मा** ने आहड़ सभ्यता का समृद्ध काल 1900 ई. पू. से 1200 ई.पू. तक माना है।
- **कार्बन-14** वैज्ञानिक पद्धति के अनुसार आहड़ सभ्यता का काल **2000 ई. पू. से 1200 ई. पू.** के मध्य माना जाता है।

उत्खनन कार्य

- आहड़ सभ्यता पर सर्वप्रथम लघु स्तर पर उत्खनन कार्य **पं. अक्षय कीर्ति व्यास** द्वारा किया गया।
- **वर्ष 1954** में **रतन चंद्र अग्रवाल** के नेतृत्व यहाँ पर व्यापक स्तर पर उत्खनन कार्य करवाया गया। **आर.सी. अग्रवाल** ने आहड़ के पास दूरमतून एवं उमरा नामक स्थानों से ताम्र शोधन के साक्ष्य प्राप्त किए हैं।
- **वर्ष 1961-62** में यहाँ **वी. एन. मिश्रा एवं एच. डी. सांकलिया** द्वारा यहाँ उत्खनन करवाया गया।
- आहड़ के उत्खनन अभियान के समय राजस्थान सरकार की ओर से **विजय कुमार एवं पी. सी. चक्रवर्ती** भी उपस्थित रहे।

महत्त्वपूर्ण तथ्य

- आहड़ के उत्खनित स्थल को **महासत्तियों का टीला** कहा जाता है।
- गिलूण्ड (राजसमन्द) से आहड़ के समान धर्म संस्कृति मिली है।
- आहड़वासी **ताम्रधातु** कर्मी थे।
- आहड़ के लोग मृतकों को कपड़ों एवं आभूषण के साथ गाड़ते थे।
- आहड़वासी **लाल एवं काले रंग के मृद्पात्रों** का उपयोग करते थे।
- आहड़वासी धूप में सुखाई गई कच्ची ईंटों से मकानों का निर्माण करते थे।
- आहड़वासी **कृषि (चावल की खेती) एवं पशुपालन (कुत्ता, हाथी आदि)** से परिचित थे।
- आहड़ से प्राप्त एक ही मकान में **4 से 6 चूल्हों** का प्राप्त होना जिस पर एक मानव हथेली की छाप है एवं **संयुक्त परिवार व्यवस्था** की ओर संकेत करते हैं।
- आहड़ सभ्यता के लोग मिट्टी के बर्तन पकाने की **उल्टी तिपाई विधि** से परिचित थे।

पुरातात्विक सामग्रियाँ-

- **आहड़ से प्राप्त पुरातात्विक सामग्रियों में प्रमुख-**
  1. नारी की खण्डित मृण्मूर्ति
  2. छपाई के ठप्पे
  3. अनाज पीसने की चक्की
  4. चित्रित बर्तन एवं ताँबे के उपकरण
  5. दो ताँबे की कुल्हाड़ियाँ
  6. ताँबे की छह मुद्राएँ तथा तीन मुहरें
  7. **एक मुद्रा** जिसके एक ओर त्रिशूल तथा दूसरी ओर **अपोलो देवता का चित्रण** है तथा **यूनानी भाषा** में लेख भी अंकित है।
  8. **अनाज रखने के मृद्भांड**, जिन्हें स्थानीय भाषा में **'गोरे' या 'कोठे'** कहा जाता है।
  9. मिट्टी की बनी टेराकोटा वृषभ आकृतियाँ
  10. बिना हत्थे का जलपात्र (**ईरानी सभ्यता** की जानकारी प्राप्त)
  11. बैल की मृणमूर्ती (बनासियन बुल)

गिलुण्ड (राजसंमद)

- **उत्खनन -** 1957-58 में बृजबासी लाल, वी. एस. शिन्दे, ग्रेगरी पोशल द्वारा दो टीलों का।
- यह एक **ताम्रयुगीन सभ्यता** है।
- इसे स्थानीय भाषा में **मोडिया मगरी** कहा जाता है।
- आहड़ के विपरीत यहाँ पक्की ईंटें भी प्राप्त हुई है।
- यहाँ से **पाँच प्रकार के मृद्भाण्ड** (सादे, काले, पॉलिशदार, लाल, काले चित्रित) प्राप्त हुए है।
- यहाँ से **मिट्टी के खिलौने** (हाथी, ऊँट, कुत्ता), पत्थर की गोलियाँ तथा हाथी दाँत की चूड़ियाँ प्राप्त हुई है।

रंगमहल (हनुमानगढ़)

- **अवस्थिति-** रंगमहल हनुमानगढ़ जिले में सरस्वती (वर्तमान में घग्घर) नदी के पास।
- यह एक **ताम्रयुगीन सभ्यता** है।
- **उत्खनन कार्य** - **डॉ. हन्नारिड** के निर्देशन में स्वीडिश दल द्वारा वर्ष 1952-54 में किया गया।

पुरातात्विक साक्ष्य-

- यहाँ से **कुषाणकालीन तथा** उससे **पहले की 105 ताँबे की मुद्राएँ** प्राप्त हुई है जिनमें कुछ पंचमार्क मुद्राएँ भी है।
- यहाँ से ब्राह्मी लिपि में नाम अंकित दो कांसे की सीलें भी प्राप्त हुई है।
- यहाँ के निवासी मुख्य रूप से **चावल की खेती** करते थे।
- यहाँ के मकानों का निर्माण ईंटों से होता था।
- यहाँ से प्राप्त **मृद्भाण्ड मुख्यत: लाल या गुलाबी रंग** के थे।
- यहाँ से गांधार शैली की मृण्मूर्तियाँ, टोटीदार घड़े, घण्टाकार मृद्पात्र एवं कनिष्क कालीन मुद्राएँ प्राप्त हुई हैं।
- **रंगमहल** से ही गुरु-शिष्य की मिट्टी की मूर्ति प्राप्त हुई है।
- इसे **कुषाणकालीन सभ्यता के समान** माना जाता है।
- **रंगमहल** में बसने वाली बस्तियों के तीन बार बसने एवं उजड़ने के प्रमाण मिले हैं।

मलाह (भरतपुर)

- यह स्थल भरतपुर जिले के **घना पक्षी अभयारण्य** में स्थित है।
- इस स्थल से अधिक संख्या में ताँबे की तलवारें एवं हार्पून प्राप्त हुए हैं।

कुराड़ा (नागौर)

- यह **ताम्रयुगीन सभ्यता स्थल** है।
- यहाँ से ताम्र उपकरणों के अतिरिक्त प्रणालीयुक्त अर्घ्यपात्र प्राप्त हुआ है।

किराड़ोत (जयपुर)

- इस सभ्यता स्थल से **ताम्रयुगीन 56 चूड़ियाँ** प्राप्त हुई है। इसमें अलग-अलग आकार की 28 चूड़ियों के 2 सेट प्राप्त हुए हैं।

ओझीयाणा (भीलवाड़ा)

- **अवस्थिति-** बदनोर के पास खारी नदी के तट पर स्थित।
- **उत्खनन -** बी. आर. मीणा तथा आलोक त्रिपाटी द्वारा (1999-2000 में)
- यहाँ से **बैल तथा गाय की मृण मूर्तियाँ** प्राप्त हुई है।

- यहाँ से प्राप्त अवशेषों के आधार पर इस **संस्कृति का विकास तीन चरणों में** हुआ है।
- इस सभ्यता का काल 2500 ईसा पूर्व से 1500 ईसा पूर्व तक माना जाता है।

लौह युगीन सभ्यता स्थल

बैराठ सभ्यता

- बैराठ जयपुर जिले में **शाहपुरा उपखण्ड में बाणगंगा नदी के किनारे** स्थित लौहयुगीन स्थल है।
- प्राचीन मत्स्य जनपद में स्थित **बैराठ की बीजक की पहाड़ी, भीम की डूंगरी व महादेव जी की डूंगरी** से हड़प्पा सभ्यता व मौर्यकाल के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- बैराठ का प्राचीन नाम **'विराटनगर'** था। महाजनपद काल में यह मत्स्य जनपद की राजधानी था।

खोज एवं उत्खनन कार्य

- बैराठ सभ्यता की खोज **वर्ष 1922 में दयाराम साहनी** के नेतृत्व में की थी।
- यहाँ पर दो स्तरों में प्रथम वर्ष **1936-37 में दयाराम साहनी** द्वारा तथा **वर्ष 1962-63 में नीलरत्न बनर्जी तथा कैलाशनाथ दीक्षित** द्वारा उत्खनन कार्य किया गया।
- बैराठ सभ्यता के लोगों का जीवन पूर्णत: ग्रामीण संस्कृति का था।

बैराठ सभ्यता की मुख्य विशेषताएँ

- यहाँ से **मौर्यकालीन** तथा इसके बाद के समय के अवशेष मिले हैं।
- **उत्तर भारतीय चमकीले मृद्भांड वाली संस्कृति** का प्रतिनिधित्व करने वाला राजस्थान में सबसे महत्त्वपूर्ण प्राचीन स्थल बैराठ है।
- बैराठ सभ्यता के लोग लौह धातु से परिचित थे। यहाँ उत्खनन से **लोहे के तीर तथा भाले** प्राप्त हुए हैं।
- यह सभ्यता स्थल **प्राचीन बौद्ध अवशेषों** के लिए प्रसिद्ध है।
- 7वीं सदी में **चीनी यात्री ह्वेनसांग** ने यहाँ की यात्रा की थी। उसने यहाँ **8 बौद्ध मठों** का उल्लेख किया।
- बैराठ से **'शंख लिपि'** के प्रमाण प्रचुर मात्रा में प्राप्त हुए हैं।
- यहाँ से **मुगलकाल में टकसाल** होने के प्रमाण मिलते हैं। यहाँ मुगल काल में ढाले गये सिक्कों पर **'बैराठ अंकित'** मिलता है।
- यहाँ भवन निर्माण के लिए मिट्टी की बनाई ईंटों का प्रयोग अधिक किया जाता था।

पुरातात्विक अवशेष

- यहाँ से **36 मुद्राएँ** प्राप्त हुई हैं जिनमें 8 पंचमार्क चाँदी की तथा 28 इण्डो-ग्रीक तथा यूनानी शासकों की हैं, जिनमें 16 मुद्राएँ यूनानी शासक मिनेण्डर की है।
- वर्ष 1999 में बीजक की पहाड़ी से **अशोक कालीन गोल बौद्ध मंदिर, स्तूप एवं बौद्ध मठ** के अवशेष मिले हैं जो हीनयान सम्प्रदाय से संबंधित है।
- बैराठ में पाषाणकालीन हथियारों के निर्माण का एक बड़ा कारखाना स्थित था।
- बैराठ के उत्खनन से मिट्टी के बने पूजा पात्र, थालियाँ, लोटे, मटके, खप्पर, कुंडियाँ, घड़े आदि मिले हैं।
- बैराठ की बीजक पहाड़ी से **1837 ई. में कैप्टन बर्ट** को बैराठ की बीजक पहाड़ी से मौर्य सम्राट **अशोक के भाब्रू शिलालेख** प्राप्त हुआ, जिस पर मौर्यकालीन ब्राह्मी लिपि उत्कीर्ण है।

भाब्रू शिलालेख

- वर्तमान में भाब्रू शिलालेख कलकत्ता संग्रहालय (एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल) में सुरक्षित है।
- भाब्रू शिलालेख में सम्राट अशोक को 'मगध का राजा' नाम से संबोधित किया गया है।
- भाब्रू शिलालेख के नीचे बुद्ध, धम्म एवं संघ लिखा हुआ है।

नगरी (चित्तौड़गढ़)

- बेड़च नदी के तट पर स्थित है और जिसका प्राचीन नाम मध्यमिका है।

उत्खनन-

- यहाँ का पहला उत्खनन कार्य 1904 में **डॉ. डी. आर. भण्डारकर** द्वारा किया गया, इसके बाद **1962-63 में केन्द्रीय पुरातत्त्व विभाग** ने और खुदाई की।

खोज-

- नगरी की खोज **1872 में कार्लाइल** द्वारा की गई थी।
- यहाँ से **शिवि जनपद के सिक्के और गुप्तकालीन कला** के अवशेष प्राप्त हुए हैं, जो क्षेत्र की सांस्कृतिक समृद्धि को दर्शाते हैं।
- **'मध्यमिका'** का उल्लेख **पतंजलि के महाभाष्य ग्रंथ** में मिलता है, जो इस स्थल की ऐतिहासिक महत्ता को बढ़ाता है।
- **घोसुण्डी अभिलेख**- यहाँ से द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व का घोसुण्डी अभिलेख भी मिला है, जो उस समय की लेखन प्रणाली और प्रशासनिक व्यवस्था का परिचायक है।
- **नगरी शिवि जनपद की राजधानी** रही है, जो इसे राजनीतिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण बनाता है।
- यहाँ से चार चक्राकार कुएँ भी प्राप्त हुए हैं, जो प्राचीन जल प्रबंधन की उत्कृष्टता को दर्शाते हैं।

रैढ़ (टोंक)

- रैढ़, टोंक जिले की निवाई तहसील में **ढील नदी** के किनारे स्थित पुरातात्त्विक स्थल है।
- यह एक **लौह युगीन सभ्यता** है।

उत्खनन-

- यहाँ पर उत्खनन कार्य **वर्ष 1938-39 में दयाराम साहनी** के नेतृत्व में तथा अंतिम रूप में उत्खनन कार्य **डॉ. केदारनाथ पुरी** के द्वारा करवाया गया।
- रैढ़ के उत्खनन से बड़ी मात्रा में मिलने वाले लौह उपकरणों तथा मुद्राओं के कारण इसे **'प्राचीन भारत का टाटानगर'** कहा जाता है।

पुरातात्विक साक्ष्य-

- यह एक धातु केंद्र था जहाँ पर औद्योगिक कार्य एवं निर्यात हेतु उपकरण एवं औजार बनाए जाते थे।
- रैढ़ में उत्खनन से लगभग **3075 आहत मुद्राएँ** तथा 300 मालव जनपद के सिक्के प्राप्त हुए हैं। यहाँ से यूनानी शासक **अपोलोडोट्स** का एक खण्डित सिक्का भी प्राप्त हुआ है।

- रैढ़ में उत्खनन से **हल्के गुलाबी रंग** से मिट्टी का बना एक संकीर्ण गर्दन वाला **फूलदान** प्राप्त हुआ है।
- यहाँ से प्राप्त मृद्भाण्ड चक्र से निर्मित है तथा यहाँ से विभिन्न प्रकार के मिट्टी के बर्तन प्राप्त हुए हैं।
- रैढ़ के मृद्भांडों में गोल **'रिंग वेल्स'** एक दूसरे पर लगा दिए जाते थे।
- यहाँ से कर्णफूल, गले का हार, चूड़ियाँ आदि आभूषणों के प्रमाण प्राप्त हुए हैं।
- रैढ़ से **मृतिका की बनी यक्षिणी की प्रतिमा** प्राप्त हुई है जो संभवत: **शुंग काल** की मानी जाती है।
- यहाँ से **मालव जनपद के 14 सिक्के, 6 सेनापति सिक्के एवं 7 वपू के सिक्के** प्राप्त हुए हैं।
- रैढ़ से एशिया का अब तक का सबसे बड़ा सिक्कों का भण्डार मिला है।
- अशोक तकनीक से पॉलिश किया हुआ चुनार बलुआ पत्थर का एक बड़ा प्याला भी मिला है जो संभवत: बाहर से आयात किया हुआ है।

सुनारी (झुंझुनूँ)

- झुंझुनूँ की खेतड़ी तहसील में **कांतली नदी** के किनारे स्थित है।

उत्खनन-

- यहाँ पर उत्खनन कार्य **वर्ष 1980-81 में राजस्थान राज्य पुरातत्त्व विभाग द्वारा** करवाया गया।

पुरातात्विक साक्ष्य-

- यहाँ से **लोहा गलाने की प्राचीनतम भट्टियाँ** प्राप्त हुई है।
- यहाँ से **स्लेटी रंग के मृद्भाण्ड संस्कृति के अवशेष** प्राप्त हुए हैं।
- सुनारी से **मातृदेवी की मृण्मूर्तियाँ तथा धान संग्रहण का कोठा** प्राप्त हुआ है।
- सुनारी से **मौर्यकालीन सभ्यता के अवशेष** मिलते हैं जिनमें काली पॉलिश युक्त मृद्पात्र है।
- **जोधपुरा, नोह तथा सुनारी से शुंग तथा कुषाणकालीन अवशेष** भी प्राप्त होते हैं।
- सुनारी के निवासी भोजन में चावल का प्रयोग करते थे तथा घोड़ों से रथ खींचते थे।

जोधपुरा (जयपुर)

- कोटपुतली में **साबी नदी** के किनारे स्थित है।
- यह एक **लौहयुगीन प्राचीन सभ्यता स्थल** है।
- यह सभ्यता 2500 ईसा पूर्व से 200 ई. के मध्य फली-फूली।

उत्खनन-

- यहाँ पर उत्खनन कार्य वर्ष **1972-73 में आर.सी. अग्रवाल तथा विजय कुमार** के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।
- यहाँ उत्खनन से प्राप्त ताम्रयुगीन मृद्भांडों पर सिंधु सभ्यता का प्रभाव दिखाई देता है।
- यह स्लेटी रंग की चित्रित मृद्भाण्ड संस्कृति का महत्त्वपूर्ण स्थल था।

पुरातात्विक साक्ष्य-

- जोधपुरा से **लौह अयस्क से लौह धातु का निष्कर्षण करने वाली भट्टियाँ** भी प्राप्त हुई है।
- इस सभ्यता में मानव ने घोड़े का उपयोग रथ के खींचने में करना प्रारम्भ कर दिया था।
- यह **शुंग एवं कुषाणकालीन सभ्यता स्थल** है।
- जोधपुरा एवं सुनारी (झुंझुनूँ) से मौर्यकालीन सभ्यता के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं।

ईसवाल (उदयपुर)

- लौह युगीन सभ्यता।
- प्राचीन औद्योगिक बस्ती।

उत्खनन कार्य -

- **राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर** के पुरातत्त्व विभाग के निर्देशन में किया गया।
- यहाँ से प्राक् ऐतिहासिक काल से मध्यकाल तक का प्रतिनिधित्व करने वाली **मानव बस्ती के प्रमाण पाँच स्तरों से प्राप्त** हुए हैं।
- यहाँ पर 5वीं शताब्दी ई.पू. में **लोहा गलाने का उद्योग** विकसित होने के प्रमाण है।
- यहाँ से प्राप्त **सिक्कों को प्रारंभिक कुषाणकालीन** माना जाता है।
- मौर्य, शुंग, कुषाणकाल में यहाँ लोहा गलाने का कार्य होता था।
- यहाँ उत्खनन में **ऊँट का दाँत** एवं **हड्डियाँ** मिली हैं।

नोह (भरतपुर)

उत्खनन कार्य-

- **वर्ष 1963-64 में रतनचंद्र अग्रवाल** के निर्देशन में।
- रेडियो कार्बन तिथि के अनुसार इस सभ्यता का समय **1100 ई.पू. से 900 ई.पू.** माना जाता है।
- यहाँ से उत्खनन में विशालकाय **यक्ष प्रतिमा** तथा मौर्यकालीन पॉलिश युक्त चुनार के चिकने पत्थर से टुकड़े प्राप्त हुए हैं।
- यहाँ से प्राप्त एक पात्र पर **ब्राह्मी लिपि** में लेख अंकित है।
- यह एक **लौहयुगीन सभ्यता** है तथा यहाँ से प्राप्त भांड काले तथा लाल है।

पुरातात्विक साक्ष्य-

- यहाँ से **5 सांस्कृतिक युगों के अवशेष** मिले हैं।
- यहाँ से कुषाण नरेश **हुविस्क** एवं वासुदेव के सिक्के प्राप्त हुए है।
- नोह से ताम्र युगीन, आर्य युगीन एवं महाभारत कालीन सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

नगर (टोंक)

- टोंक जिले में **उणियारा कस्बे** के पास स्थित है। इसे **कर्कोट नगर** भी कहा जाता है।
- इसका प्राचीन नाम '**मालव नगर**' था।

उत्खनन कार्य -

- वर्ष 1942-43 में श्रीकृष्ण देव द्वारा।

पुरातात्विक साक्ष्य-

- यहाँ से बड़ी संख्या में **मालव सिक्के तथा आहत मुद्राएँ** प्राप्त हुई है।
- यहाँ से प्राप्त मृद्भांडों के अधिकतर अवशेषों का रंग लाल है।
- नगर में उत्खनन से गुप्तोत्तर काल की स्लेटी पत्थर से निर्मित **महिषासुरमर्दिनी की मूर्ति** प्राप्त हुई है।

- इसके अतिरिक्त यहाँ से मोदक रूप में गणेश का अंकन, फणधारी नाग का अंकन, कमल धारण किए लक्ष्मी की खड़ी प्रतिमा प्राप्त हुई है।
- वर्तमान में नगर सभ्यता को '**खेड़ा सभ्यता**' के नाम से जाना जाता है।
- नगर के उत्खनन से लगभग **6000 मालव सिक्के** मिले हैं।

भीनमाल (जालोर)

उत्खनन कार्य-

- वर्ष 1953-54 में रतनचंद्र अग्रवाल के निर्देशन में।
- यहाँ के **मृद्पात्रों पर विदेशी प्रभाव** दिखाई देता है।
- यहाँ की खुदाई से मृद्भाण्ड तथा शक क्षत्रपों के सिक्के प्राप्त हुए है।
- भीनमाल से **यूनानी दुहत्थी सुराही** भी प्राप्त हुई है।
- यहाँ से **रोमन ऐम्फोरा (सुरापात्र)** भी मिला है।
- यहाँ से **ईसा की प्रथम शताब्दी एवं गुप्तकालीन अवशेष** प्राप्त हुए हैं।
- संस्कृत विद्वान महाकवि माघ एवं गुप्तकालीन विद्वान ब्रह्मगुप्त का जन्म स्थान **भीनमाल** माना जाता है।
- **चीनी यात्री ह्वेनसांग** ने भी भीनमाल की यात्रा की।

नैनवा (बूँदी)

- **उत्खनन कार्य -** श्रीकृष्ण देव के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।
- इस स्थल से 2000 वर्ष पुरानी महिषासुरमर्दिनी की मृण्मूर्ति प्राप्त हुई है।

अन्य पुरातात्विक स्थल

बागौर सभ्यता

- **भीलवाड़ा में कोठारी नदी** के किनारे स्थित है।
- **उत्खनन कार्य -** यहाँ पर उत्खनन कार्य वर्ष 1967-68 में डॉ. विरेन्द्रनाथ मिश्र, डॉ. एल.एस. लेश्निक व डेक्कन कॉलेज पूना तथा राजस्थान पुरातत्त्व विभाग के सहयोग से किया गया।
- बागोर सभ्यता के तीन स्तरों के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- यहाँ से **कृषि तथा पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य** यहाँ मिले हैं।
- **लघु पाषाणकालीन औजारों** के भडांर प्राप्त हुए हैं।
- यहाँ से **छेद वाली सुई** प्राप्त हुई है।
- बागोर की सभ्यता को **'आदिम संस्कृति का संग्रहालय'** माना जाता है।

तिलवाड़ा (बालोतरा)

- तिलवाड़ा बालोतरा जिले में **लूणी नदी** के किनारे स्थित पुरातात्विक स्थल है।

उत्खनन कार्य -

- यहाँ पर उत्खनन कार्य वर्ष 1967-68 में 'राजस्थान राज्य पुरातत्त्व विभाग' द्वारा करवाया गया।
- यहाँ पर उत्खनन का कार्य डॉ. वी. एन. मिश्र के नेतृत्व में किया गया।
- यह एक **ताम्र पाषाणकालीन स्थल** है जहाँ से 500 ई. पू. से 200 ई. तक विकसित सभ्यताओं के अवशेष मिले हैं।
- यहाँ से उत्तर पाषाण युग के भी अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- यहाँ एक अग्निकुण्ड मिला है जिसमें मानव अस्थि भस्म तथा मृत पशुओं के अवशेष मिले हैं।

बरोर (श्रीगंगानगर)

- श्रीगंगानगर में सरस्वती नदी के तट पर इस सभ्यता के प्रमाण प्राप्त हुए हैं।
- वर्ष 2003 में यहाँ उत्खनन कार्य शुरू किया गया।
- यहाँ से प्राप्त अवशेषों के आधार पर इस सभ्यता को विकसित हड़प्पा काल में बाँटा गया है।
- यहाँ के मृद्भांडों में काली मिट्टी के प्रयोग के प्रमाण प्राप्त हुए हैं।
- वर्ष 2006 में यहाँ मिट्टी के पात्र में सेलखड़ी के लगभग **8000 मनके** प्राप्त हुए हैं।
- यह स्थल हड़प्पाकालीन विशेषताओं के समान जैसे सुनियोजित नगर व्यवस्था, मकान निर्माण में कच्ची ईंटों का प्रयोग तथा विशिष्ट मृद्भांड परम्परा आदि से युक्त है।
- यहाँ से **बटन के आकार की मुहरें** प्राप्त हुई हैं।

जूनाखेड़ा (पाली)

- इस पुरातात्त्विक स्थल की खोज **गैरिक** ने की थी।
- यहाँ से उत्खनन में मिट्टी के बर्तन पर **'शालभंजिका'** का अंकन मिला है।
- इसके अतिरिक्त यहाँ से काले ओपदार कटोरे तथा छोटे आकार के दीपक प्राप्त हुए हैं।

नलियासर (जयपुर)

- जयपुर स्थित इस पुरातात्त्विक स्थल से चौहान वंश से पूर्व की सभ्यता के प्रमाण प्राप्त हुए हैं।
- यहाँ से **ब्राह्मी लिपि में लिखित कुछ मुहरें** प्राप्त हुई है।
- यहाँ से आहत मुद्राएँ, उत्तर इण्डोससेनियन सिक्के, कुषाण शासक हुविस्क, इण्डोग्रीक, यौद्धेयगण तथा गुप्तकालीन चाँदी के सिक्के मिले हैं।
- यहाँ से **105 कुषाणकालीन सिक्के** प्राप्त हुए हैं।
- इस सभ्यता का समय तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से छठी सदी तक माना जाता है।

लाछूरा (भीलवाड़ा)

- यह पुरातात्त्विक स्थल **भीलवाड़ा** जिले की आसींद तहसील में स्थित है।
- यहाँ पर उत्खनन कार्य **वर्ष 1998-1999 में बी. आर. मीना** के निर्देशन में किया गया।
- यहाँ से 700 ई. पू. से 200 ई. तक की सभ्यताओं के प्रमाण प्राप्त हुए हैं।
- यहाँ से मानव तथा पशुओं की मृण्मूर्तियाँ, ताँबे की चूड़ियाँ, मिट्टी की मुहरें जिस पर ब्राह्मी लिपि में 4 अक्षर अंकित है, ललितासन में नारी की मृण्मूर्तियाँ आदि प्राप्त हुए हैं।
- यहाँ से शुंगकालीन तीखे किनारे वाले प्याले प्राप्त हुए हैं।

कोटड़ा (झालावाड़)

- इस स्थल का उत्खनन **वर्ष 2003 में दीपक शोध संस्थान** द्वारा किया गया।
- यहाँ से 7वीं से 12वीं शताब्दी के मध्य के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

कणसवा (कोटा)

- इस स्थल से **मौर्य शासक धवल** का 738 ई. से संबंधित लेख मिला है।

डडीकर (अलवर)

- इस स्थल से पाँच से सात हजार वर्ष पुराने शैलचित्र प्राप्त हुए हैं।

गरड़दा (बूँदी)

- **छाजा नदी** के किनारे स्थित इस स्थान से **पहली बर्ड राइडर रॉक पेंटिंग** प्राप्त हुई है।

बांका (भीलवाड़ा)

- यहाँ से **राजस्थान की प्रथम अलंकृत गुफा** मिली है।

गुरारा -

- सीकर जिले में स्थित है।
- यहाँ से चाँदी के लगभग 2744 पंचमार्क सिक्के मिले हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. कालीबंगा उत्तरी राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में.. नदी के किनारे स्थित है।
(a) घग्घर (सरस्वती) (b) लूणी
(c) साबरमती (d) बनास

2. सिन्धु घाटी से अलग एक हड़प्पा उत्खननकर्ताओं द्वारा निम्नलिखित में से किसका वर्णन किया गया है?
(a) कुरदा (b) वैनारा
(c) कालीबंगा (d) बिहारीपुरा

3. कालीबंगा सभ्यता को सर्वप्रथम प्रकाश में लाने का श्रेय दिया जा सकता है?
(a) बी. बी. लाल (b) बी. के. थापर
(c) एम. डी. खरे (d) अमलानन्द घोष

4. किस एक अभिकरण ने कालीबंगा के उत्खनन कार्य का उत्तरदायित्व सँभाला?
(a) राजस्थान पुरातत्त्व एवं संग्रहालय विभाग, जयपुर
(b) भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली
(c) डेक्कन कॉलेज, पुणे
(d) मेलबोर्न विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया

5. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन 'कालीबंगा सभ्यता' के विषय में सही नहीं है?
(a) कालीबंगा से ऊँट की हड्डियों के साक्ष्य मिले हैं।
(b) कालीबंगा से प्रथम अंकित किए गए भूकम्प के साक्ष्य मिले हैं।
(c) कालीबंगा की खोज एक इतालवी इंडोलॉजिस्ट लुइगी पियो टेसीटोरी ने की थी।
(d) प्राक्हड़प्पा अग्निवेदियों के साक्ष्य मिले हैं।

6. गणेश्वर की खुदाई के संदर्भ में सबसे असत्य कथन का चयन करें-
(a) गणेश्वर, नीम का थाना में कंतली नदी के स्रोत पर खोजी गई।
(b) गणेश्वर में राजस्थान पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग द्वारा की गई खुदाई में लगभग 5000 वर्ष पुरानी संस्कृति प्रकाश में आई।
(c) यहाँ हड़प्पा से तांबा प्राप्त किया जाता था।
(d) गणेश्वर तांबे की संस्कृति का एक महत्वपूर्ण स्थल है।
(e) अनुत्तरित प्रश्न

7. किस सभ्यता को धूलकोट भी कहते हैं?
(a) कालीबंगा (b) बालाथल
(c) बैराठ (d) आहड़

8. राजस्थान की कौन-सी सभ्यता बनास, बेड़च, गंभीरी और कोठारी नदियों के तटों और घाटियों में फैली हुई थी?
(a) कालीबंगा (b) गणेश्वर
(c) आहड़ (d) बैराठ

9. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(a) गणेश्वर एक उत्खनन स्थल नहीं है।
(b) बैराठ एक ग्राम्य-संस्कृति केन्द्र था।
(c) कालीबंगा लौह-युग संस्कृति का एक उदाहरण था।
(d) आहड़वासियों का महत्त्वपूर्ण व्यवसाय अयस्क तांबे को गलाना तथा ताम्र वस्तुएँ बनाना था।

10. आहड़ सभ्यता के बारे में सही कथन का चयन कीजिए-
1. आहड़वासी ताँबा गलाना जानते थे।
2. ये लोग चावल से परिचित नहीं थे।
3. धातु का काम आहड़वासियों की अर्थव्यवस्था का एक साधन था।
4. यहाँ से काले-लाल रंग के मद्भाण्ड मिले हैं, जिन पर सामान्यतः सफेद रंग से ज्यामितीय आकृतियाँ उकेरी गई हैं।
कूटः
(a) 1, 3 एवं 4 सही है।
(b) 1 एवं 2 सही है।
(c) 1, 2 और 3 सही है।
(d) 3 एवं 4 सही है।

11. निम्न में से किस सभ्यता को भारत में सभी ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी (ताम्रसंचयी) माना जाता है-
(a) गणेश्वर (b) बागौर
(c) आहड़ (d) गिलुण्ड

12. गणेश्वर सभ्यता किस काल से सम्बन्धित है?
(a) हड़प्पा काल (b) लौह युग
(c) ताम्र/काँस्य युग (d) पुरापाषाण काल

13. किस सभ्यता में मकान व बस्तियों के निर्माण में ईंटों का प्रयोग नहीं होता था?
(a) आहड़ (b) कालीबंगा
(c) गणेश्वर (d) बैराठ

14. दयाराम साहनी, नीलरत्न बनर्जी एवं कैलाशनाथ दीक्षित की किस सभ्यता के उत्खनन में मुख्य भूमिका रही?
(a) आहड़ (b) बैराठ
(c) गिलूण्ड (d) बागोर

15. बैराठ के 'बौद्ध मठ' और 'अशोक स्तंभ' के आधार पर राजस्थान के बौद्ध धर्म के प्रमुख स्थान थे-
(a) बैराठ, लालसोट, शेरगढ़, नगरी
(b) बड़नगर, आसपुरा, भूरी, भैंसलाना
(c) बैराठ, जोधपुरा, गणेश्वर, बालेश्वर
(d) लाटा, विराटनगर, अहिरवाला, नागौर

16. कौन गिलुण्ड सभ्यता के उत्खनन से संबंधित नहीं है?
(a) डॉ. वी.एस. शिन्दे (b) बी. बी. लाल
(c) प्रो. ग्रेगरी पोशल (d) डॉ. सूरजभान

17. बालाथल सभ्यता का उत्खनन किसके निर्देशन में हुआ?
(a) वी. एन. मिश्र (b) बी. बी. लाल
(c) आर.सी. अग्रवाल (d) अमलानंद घोष

18. कौनसा आहड़-बनास संस्कृति का पुरातात्विक स्थल है, जो राजस्थान के उदयपुर जिले की वल्लभनगर तहसील में स्थित है?
(a) बदर (b) बख्तपुरा
(c) अकबरपुर (d) बालाथल

19. बागोर के बारे में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए-
1. बागोर में लघु पाषाणोपकरण मिले है।
2. वी. एन. मिश्र बागोर के उत्खननकर्ताओं में से एक थे।
(a) 1 और 2 दोनों सही है।
(b) केवल 1 सही है।
(c) केवल 2 सही है।
(d) 1 और 2 दोनों गलत है।

20. प्राचीन उत्खनन स्थल 'नगर' राजस्थान के किस जिले में स्थित है?
(a) सीकर (b) अलवर
(c) टोंक (d) पाली

21. भरतपुर जिले के किस गाँव में उत्खनन से ताम्रयुगीन सभ्यता के अवशेष मिले हैं?
(a) नदबई (b) नोह
(c) रूपवास (d) कुम्हेर

22. ओझियाना पुरातत्त्व स्थल की खुदाई के सन्दर्भ में कौन-सा कथन सत्य है?
(a) यहाँ लोहा लगाने के प्रमाण मिले हैं।
(b) पुरातत्व स्थल ओझियाना का उत्खनन कार्य अमलानन्द घोष के निर्देशन में हुआ।
(c) यहाँ प्रचुर मात्रा में लोहा प्राप्त हुआ है।
(d) ताँबे की चूड़ियाँ और ताँबे की शैली अंगूठी और माँदलिया उल्लेखनीय आभूषण प्राप्त हुए हैं।

23. निम्नांकित में से कौन-से कथन सत्य है?
1. रंगमहल का उत्खनन वी. एन. मिश्रा एवं राजस्थान राज्य पुरातत्त्व विभाग ने संयुक्त रूप से 1959 ई. में किया था।
2. उत्तरी राजस्थान में रंगमहल प्राक्-हड़प्पा युगीन पुरास्थल है।
3. रंगमहल का उत्खनन स्वीडन के पुरातत्त्ववेता हन्नारिड़ ने 1952-53 ई. में किया था।
4. रंगमहल संस्कृति कुषाण कालीन है।
(a) 1 और 4
(b) 3 और 4
(c) 2 और 3
(d) 1 और 2

24. किस सभ्यता के लोग अपने मृतकों को आभूषणों के साथ दफनाते थे?
(a) कालीबंगा (b) आहड़
(c) बागोर (d) गिलून्ड

25. कालीबंगा सभ्यता के संदर्भ में सबसे असत्य कथन का चयन करें।
(a) यह सभ्यता राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में स्थित है।
(b) कालीबंगा एक सुनियोजित शहर था, घरों के निर्माण के लिए धूप में बनी ईटों का उपयोग किया जाता था।
(c) कालीबंगा में जुताई वाले खेत का कोई प्रमाण नहीं मिला है।
(d) प्राचीन दृषद्वती और सरस्वती नदी घाटी (वर्तमान घग्गर नदी क्षेत्र) ने कालीबंगा की सभ्यता को जन्म दिया।

26. निम्नांकित में किस इतिहासवेत्ता ने कालीबंगा को सिन्धु घाटी साम्राज्य की तृतीय राजधानी कहा है?
(a) जी.एच. ओझा (b) श्यामल दास
(c) दशरथ शर्मा (d) दयाराम साहनी

27. गणेश्वर सभ्यता का उत्खनन किसके निर्देशन में हुआ?
(a) एच.डी. साकलिया (b) ए. एन. घोष
(c) वी.एन. मिश्रा (d) आर.सी. अग्रवाल

28. कालीबंगा पुरास्थल के किस दिशा में जुता हुआ खेत मिलता है-
(a) उत्तर-पूर्व (b) उत्तर-पश्चिम
(c) दक्षिण-पूर्व (d) दक्षिण-पश्चिम

29. निम्नलिखित में से किस स्थल से उत्खनन में 'अग्नि-वेदिकाएँ' मिली थी?
(a) मोहनजोदड़ो (b) चन्हूदाड़ो
(c) लोथल (d) कालीबंगा

30. दोहरी रक्षा प्राचीर के साक्ष्य राजस्थान की किस सभ्यता से प्राप्त हुए हैं?
(a) बालाथल सभ्यता
(b) ओझियाना सभ्यता
(c) कालीबंगा सभ्यता
(d) गणेश्वर सभ्यता

ANSWER KEY				
1. [a]	2. [c]	3. [d]	4. [b]	5. [d]
6. [c]	7. [d]	8. [c]	9. [d]	10. [a]
11. [a]	12. [c]	13. [c]	14. [b]	15. [a]
16. [d]	17. [a]	18. [d]	19. [a]	20. [c]
21. [b]	22. [d]	23. [b]	24. [b]	25. [c]
26. [c]	27. [d]	28. [c]	29. [d]	30. [c]

♦♦♦♦

राजस्थान की
कला एवं संस्कृति

- **शुक्र नीति** - राज्य को मानव शरीर का अंग मानते हुए शुक्र नीति के अनुसार दुर्ग को शरीर के प्रमुख अंग **'हाथ'** की संज्ञा दी गई है।
- शुक्र नीति के अनुसार **सैन्य दुर्ग सर्वश्रेष्ठ** श्रेणी का **दुर्ग** है।

शुक्र नीति के अनुसार दुर्ग 9 श्रेणियों के होते हैं-

1. **गिरी दुर्ग** – पहाड़ी पर निर्मित दुर्ग। राजस्थान के अधिकांश दुर्ग इसी श्रेणी में निर्मित है।
   उदाहरण - मेहरानगढ़(जोधपुर), तारागढ़(अजमेर)।
2. **एरण दुर्ग** – ऐसा दुर्ग जहाँ तक पहुँचने का मार्ग कठिन और दुर्गम हो।
   उदाहरण - चित्तौडगढ़ और जालौर दुर्ग।
3. **वन दुर्ग** – घने जंगलों में निर्मित दुर्ग।
   उदाहरण - सिवाना का दुर्ग।
4. **धान्वन दुर्ग** – समतल सतह पर निर्मित दुर्ग।
   उदाहरण - जैसलमेर का दुर्ग।
5. **जल दुर्ग** – नदियों के संगम स्थल पर निर्मित दुर्ग।
   उदाहरण - गागरोण दुर्ग।
6. **पारिख दुर्ग** – चारों तरफ गहरी खाई युक्त दुर्ग।
   उदाहरण- भरतपुर दुर्ग, जूनागढ़ दुर्ग।
7. **पारिध दुर्ग** – ऐसा दुर्ग जिसके चारों तरफ परकोटा हो।
   उदाहरण- चित्तौडगढ़, जैसलमेर दुर्ग।
8. **सैन्य दुर्ग** – ऐसा दुर्ग जिसमें सैनिक निवास करते हो।
9. **सहाय दुर्ग** – जहाँ सैनिक व आमजन दोनों निवास करते हो।

- राजस्थान में महाराष्ट्र एवं मध्य प्रदेश के पश्चात् सर्वाधिक दुर्गों का निर्माण हुआ है।
- राजस्थान में दुर्गों के स्थापना का विकास का प्रथम आधार **कालीबंगा की खुदाई** में मिलता है।

कौटिल्य के अनुसार दुर्ग की 4 श्रेणियाँ है-

- 1. औदुक दुर्ग   2. पर्वत दुर्ग
  3. धान्वन दुर्ग   4. वन दुर्ग
- **चित्तौड़ दुर्ग** धान्वन श्रेणी के दुर्ग को छोड़कर सभी श्रेणी का दुर्ग है।

राजस्थान के 6 दुर्ग यूनेस्को की वर्ल्ड हेरिटेज साइट में शामिल -

- 1. आमेर दुर्ग   2. गागरोण दुर्ग
  3. कुम्भलगढ़ दुर्ग   4. जैसलमेर दुर्ग
  5. रणथम्भौर दुर्ग   6. चित्तौड़गढ़ दुर्ग।
- ये दुर्ग **जून, 2013** में नोमपेन्ह (कम्बोडिया) में हुई वर्ल्ड हेरिटेज कमेटी की बैठक में यूनेस्को साइट की सूची में शामिल किए गये।

राजस्थान के प्रसिद्ध दुर्ग-

- राजस्थान का सबसे प्राचीन दुर्ग – भटनेर (हनुमानगढ़)
- मिट्टी से निर्मित दुर्ग –
  1. लोहागढ़ दुर्ग   2. भटनेर दुर्ग
- **राजस्थान का सबसे नवीन दुर्ग –**
  1. मोहनगढ़ (जैसलमेर)   2. लोहागढ़ (भरतपुर)
- सर्वाधिक आक्रमण झेलने वाला दुर्ग – तारागढ़ (अजमेर)
- सर्वाधिक विदेशी आक्रमण वाला दुर्ग – भटनेर दुर्ग
- सर्वाधिक गहराई में स्थित दुर्ग – लोहागढ़
- सर्वाधिक बुर्जों वाला किला – सोनारगढ़

सोनारगढ़/जैसलमेर का किला

- जैसलमेर के सोनारगढ़ के नाम से प्रसिद्ध दुर्ग की नींव **जैसल भाटी** ने 1155 ई. में रखी।
- इस दुर्ग का निर्माण शालिवाहन द्वितीय ने पूर्ण करवाया।
- **उपनाम -** सोनगढ़, गौहरारगढ़, त्रिकूटगढ़ एवं 'उत्तर भड़ किवाड़'।
- **प्रकार -** धान्वन श्रेणी का दुर्ग।
- यह त्रिकुट पहाड़ी पर त्रिभुजाकार आकृति में निर्मित है।
- पीले पत्थरों से निर्मित यह किला **राजस्थान का दूसरा बड़ा आवासीय किला है**।
- सोनारगढ़ दुर्ग का निर्माण **चूने का प्रयोग किए बिना पत्थरों को जोड़कर** किया गया है।
- जैसलमेर दुर्ग विश्व का एकमात्र दुर्ग है जिसकी **छत लकड़ी की** बनी हुई है।
- सोनारगढ़ किले का **प्रवेश द्वार अक्षयपोल** कहलाता है।
- सोनारगढ़ किले के पास ही **गढ़ीसर/घडसीसर झील** स्थित है।

प्रमुख दर्शनीय स्थल-

(1) **99 बुर्ज-** यह दुर्ग **सर्वाधिक बुर्जों वाला (99 बुर्ज)** किला है।
(2) **लक्ष्मीनारायण जी का मन्दिर-** इस दुर्ग का प्रमुख मंदिर **लक्ष्मीनारायण जी का मन्दिर** है, जिसमें जैसलमेर शासकों के आराध्य देव की मूर्ति मेड़ता से लाई गई।
(3) इस दुर्ग का प्राचीन मंदिर **आदिनाथ जी (जैन मंदिर)** का है।
(4) जैसलु कुआँ
(5) कमरकोट (घाघरानुमा परकोटा)
(6) **जिनभद्र सूरी भंडार -** यहाँ प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ रखे हुए है।
(7) **शीश महल -** दुर्ग में महारावल अखैसिंह द्वारा निर्मित सर्वोत्तम विलास।

ढाई साके-:

- जैसलमेर दुर्ग ढाई साकों के लिए प्रसिद्ध है।
- **प्रथम साका -** जैसलमेर का प्रथम साका भाटी शासक **मूलराज द्वितीय और अलाउद्दीन खिलजी** के मध्य 1312 ई. में हुआ, इसमें मूलराज द्वितीय के नेतृत्व में केसरिया हुआ।
- **दूसरा साका -** जैसलमेर का दूसरा साका **रावल दूदा और दिल्ली के फिरोजशाह तुगलक** के मध्य 1370-71 ई. में हुआ।
- **तीसरा अर्द्ध साका** - 1550 ई. में जैसलमेर शासक राव **लूणकरण और कंधार शासक अमीर अली** के मध्य हुआ। इसमें वीरों ने केसरिया तो किया लेकिन जौहर नहीं हुआ, इसलिए इसे अर्द्ध साका कहा।
- **अबुल फजल** ने इस दुर्ग के बारे में कहा कि **"घोड़ा कीजे काठ का पग किजे पाषाण शरीर राखे बखतरबंद ते पहुँचे जैसाण।"**

नोट-

- राजस्थान इतिहास का यह **एकमात्र अर्द्ध साका** हुआ।
- राजस्थान के इस दुर्ग को **यूनेस्को** ने वर्ष 2013 में **विश्व विरासत** में शामिल किया।
- फिल्म निर्देशक **सत्यजीत रे** द्वारा इस दुर्ग पर '**सोनार किला फिल्म**' का निर्माण किया गया।
- दूर से देखने पर यह दुर्ग पहाड़ी पर "**लंगर डाले एक जहाज का आभास**" कराता है।

भटनेर दुर्ग (हनुमानगढ़)

- इस दुर्ग का निर्माण तीसरी सदी के अन्त (295 ई.) में **भूपत भाटी** द्वारा **सरस्वती या घग्घर नदी** के तट पर करवाया गया था।
- इस दुर्ग का अन्य नाम **'उत्तरी सीमा का प्रहरी'** है।
- **वास्तुकार -** कैकेया।
- **श्रेणी -** धान्वन दुर्ग।
- इस दुर्ग में **52** विशाल बुर्ज हैं।
- किले का निर्माण पक्की हुई ईटों और चूने से हुआ था।
- भटनेर दुर्ग राजस्थान का **सबसे प्राचीन दुर्ग** है।
- भटनेर दुर्ग पर **सबसे अधिक विदेशी आक्रमण** हुए।
- 1003 ई. में **महमूद गजनवी** का प्रथम विदेशी आक्रमण हुआ तथा अंतिम विदेशी आक्रमण 1532-34 ई. का **कामरान** का हुआ।
- यह दुर्ग राजस्थान का एकमात्र ऐसा दुर्ग है जहाँ पर **मुस्लिम महिलाओं ने जौहर** किया। यह जौहर 1398 ई. में हुआ था। उस समय भटनेर का शासक **दूलचंद** था और आक्रमण **तैमूर लंग** का हुआ।
- इस जौहर का प्रमाण तैमूर लंग की आत्मकथा **'तुजुक ए तैमुरी'** में मिलता है।
- **1805 ई.** में बीकानेर शासक **सूरतसिंह** ने भटनेर शासक **जावतासिंह भट्टी** को मंगलवार के दिन पराजित कर इसका नामकरण **हनुमानगढ़** किया।
  इस दुर्ग में बलबन के किलेदार **'शेर खाँ की कब्र'** है।
- भटनेर दुर्ग में एक प्रवेशद्वार पर एक राजा के साथ **6** नारियों की आकृतियाँ बनी हैं।

जूनागढ़ (बीकानेर)

- **निर्माण -** 1589-94 ई. में **रायसिंह** के द्वारा करवाया गया।
- यह किला राती घाटी में **'बीका की टेकरी'** के ऊपर निर्मित दुर्ग है।
- जूनागढ़ का दुर्ग **'धान्वन दुर्ग'** की श्रेणी में आता है।

उपनाम-

(1) **जमीन का जेवर**
(2) **लालगढ़-** लाल पत्थरों से निर्मित होने के कारण '**लालगढ़**' भी कहा जाता है।
(3) **रातीघाटी का किला।**

- यह दुर्ग **सूरसागर झील के किनारे** स्थित है।
- **दुर्ग की आकृति -** चतुष्कोण या चतुर्भुजाकृति।

प्रवेश द्वार -:

- **बाहरी -** कर्णपोल एवं चाँदपोल।
- **भीतरी -** दौलतपोल, फतेहपोल, रतनपोल, सूरजपोल एवं ध्रुवपोल।
- सूरज पोल पर **राजा रायसिंह की प्रशस्ति** उत्कीर्ण है। **(प्रशस्ति रचयिता- जैता)**
- **मुख्य द्वार सूरज पोल** पर गजारूढ़ '**जयमल व फत्ता**' की मूर्तियाँ स्थित है, जो मेवाड़ के महाराणा उदयसिंह के सेनापति थे।

दुर्ग के दर्शनीय स्थल :-

(1) अनूप संग्रहालय
(2) फूल महल
(3) चन्द्र महल
(4) लाल निवास
(5) छत्र महल
(6) गंगा निवास महल
(7) दलेल निवास महल
(8) रतन निवास महल।
(9) **दुर्ग में दो कुएँ** - रामसर एवं रानीसर।
(10) 33 **करोड़ देवी-देवताओं का मंदिर -** यहाँ सिंह पर सवार गणपति (हेरंब गणपति) की दुर्लभ प्रतिमा है।
(11) जूनागढ़ के दुर्ग में **नागणेची माता व लक्ष्मीनारायण जी** का मंदिर है। लक्ष्मीनाराय जी का मंदिर जूनागढ़ का आकर्षक मंदिर है, इसका **निर्माण रतनसिंह** ने करवाया।

- राजस्थान में पहली बार लिफ्ट इसी दुर्ग में लगाई थी।
- **जूनागढ़ दुर्ग के सम्बन्ध में दीनानाथ दुबे की उक्ति – 'दीवारों के भी कान होते है पर जूनागढ़ के महलों की दीवारें तो बोलती हैं।'**
- यह दुर्ग वास्तव में आगरा के दुर्ग से मिलता-जुलता है।

मेहरानगढ़ दुर्ग (जोधपुर)

- **निर्माण -**1459 ई. में राव जोधा द्वारा करवाया गया।
- दुर्ग की **नींव करणी माता** (रिद्धि बाई) ने रखी।
- **इस दुर्ग की श्रेणी** – गिरि दुर्ग।
- **अवस्थिति -** पंचेटिया पहाड़ी/चिड़िया टुक पहाड़ी पर स्थित है।
- **उपनाम-** कागमुखीगढ़, मयूरध्वज गढ़, जोधा की ढाणी, सूर्यगढ़, गढ़ चिंतामणि, मारवाड़ का सिरमौर।
- इस दुर्ग की नींव में **राजाराम जी मेघवाल** को जीवित चुना गया।
- **प्रवेश द्वार -**
  (1) **जयपोल** – उत्तर-पूर्व में मानसिंह द्वारा **1808 ई.** में निर्मित।
  (2) **फतेहपोल** – दक्षिण-पश्चिम में अजीतसिंह द्वारा **1707 ई.** में निर्मित।
  (3) **अन्य प्रवेश द्वार** - ध्रुव पोल, सुरज पोल, इमरत पोल तथा भैरों पोल।
- **मेहरानगढ़ की मुख्य तोपें -** किलकिला, गजनी, शम्भूबाण, गजक, गुब्बार जनजमा, कड़क, बिजली आदि।
- मेहरानगढ़ दुर्ग में पेयजल स्रोतों में **रानीसर तथा पदमसर** तालाब है।

प्रमुख दर्शनीय स्थल-:

प्रमुख महल- दुर्ग के भीतर फ़तेह महल, फूल महल, शृंगार चंवरी महल, मोती महल स्थित हैं। इनमें फूल महल (अभयसिंह द्वारा निर्मित) मेहरानगढ़ का सबसे आकर्षक महल है।

मंदिर:

(1) **चामुण्डा माता का मंदिर-** मेहरानगढ़ दुर्ग में राठौड़ राजवंश की आराध्य देवी **चामुण्डा माता का मंदिर** है, जिसका निर्माण **राव जोधा** द्वारा करवाया गया। 2008 **वर्ष में चामुण्डा मंदिर में भगदड़ मच जाने से कई लोग मारे गये इसकी जाँच हेतु जसराज चोपड़ा कमेटी का गठन किया गया।**

(2) **मुरली मनोहर** (3) **आनंदघनजी**

(4) **राठौड़ों की कुलदेवी नागणेची जी का मंदिर**

अन्य दर्शनीय स्थल-:

- **मामा-भान्जा (धन्ना और भींवा) -** यह छतरी मेहरानगढ़ दुर्ग में लौहा पोल द्वार के पास है। यह **10** खम्भों की छतरी है।
- भूरे खाँ की मजार इसी दुर्ग में है।
- **पुस्तक प्रकाश पुस्तकालय -** इस दुर्ग में महाराजा मानसिंह द्वारा स्थापित पुस्तकालय।
- **वीर कीरतसिंह सोढ़ा** की छतरी इसी दुर्ग में है।
- **श्रृंगार चौकी -** महाराजा तख्तसिंह द्वारा दौलत खाने के आँगन में निर्मित चौकी, जहाँ जोधपुर के राजाओं का राजतिलक होता था।
- **जल स्रोत-** दुर्ग में **राणीसर एवं पद्मसर** तालाब जल के मुख्य स्रोत है। राणीसर तालाब का निर्माण राव जोधा की रानी जसमा हाड़ी ने करवाया था।
- दुर्ग में स्थित संग्रहालय में अकबर की तलवार रखी हुई है।
- इस दुर्ग के बारे में **रुडयार्ड क्लिपिंग** ने कहा कि **"इसका निर्माण तो परियों व फरिश्तों ने करवाया।"**
- **जैकलीन कैनेडी** ने इस दुर्ग को 'दुनिया का आठवाँ अजुबा' कहा।
- राजस्थान का प्रथम दुर्ग जिसमें '**ऑडियो गाइड टूर**' की सुविधा है।

चित्तौड़गढ़ दुर्ग

- **निर्माण-** चित्तौड़गढ़ दुर्ग के निर्माता चित्रांगद मौर्य (8वीं सदी में निर्मित) थे। (प्रसिद्ध ग्रंथ 'वीर विनोद' के अनुसार)
- **उपनाम –** दुर्गों का सिरमौर, राजस्थान का गौरव, मालवा का प्रवेश द्वार, दक्षिणी सीमा का प्रहरी, त्याग व बलिदान का दुर्ग।
- चित्तौड़गढ़ दुर्ग **राजस्थान का सबसे बडा लिविंग फोर्ट** है।
- राजस्थान का **एकमात्र दुर्ग जिसमें खेती** होती है।
- **आकृति -** व्हेल मछली के समान।
- यह दुर्ग चित्तौड़ में **गंभीरी और बेड़च नदियों** के संगम पर स्थित है।
- **श्रेणी एवं पठार- 616** मीटर ऊँचे मेसा पठार पर निर्मित गिरि दुर्ग। यह दुर्ग **'धान्वन दुर्ग'** को छोड़कर शेष सभी **8** श्रेणियों में रखा जा सकता है।
- यह दुर्ग राजस्थान के किलों में क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा दुर्ग है। **(**क्षेत्रफल **– 28** वर्ग किमी**.)**
- यह दिल्ली-मालवा मार्ग पर अवस्थित है।
- **प्रथम विदेशी आक्रमण -** मामू अफगान का।
- चित्तौड़गढ़ दुर्ग के बारे में **अबुल फजल** ने कहा कि **"गढ़ तो चित्तौड़गढ़ बाकी सब गढैया"**
- **7 प्रवेश द्वार**:- पाडन पोल **(**मुख्य व पहला प्रवेश द्वार**)**, भैरव पोल**,** हनुमान पोल**,** गणेश पोल**,** जोड़ला पोल**,** लक्ष्मण पोल**,** रामपोल।

चित्तौड़गढ़ दुर्ग तीन साके हुए –

1. प्रथम साका

- राजस्थान इतिहास का सबसे बड़ा साका **1303 ई.** में रावल रतनसिंह और अलाउद्दीन खिलजी के बीच हुआ।
- इस साके में रानी पद्मिनी ने जौहर किया।
- चित्तौड़गढ़ में प्रतिवर्ष चैत्र मास में जौहर मेला लगता है।

2. दूसरा साका

- दूसरा साका **1534 ई.** में गुजरात के शासक बहादुरशाह और रावल बाघसिंह के बीच हुआ।
- इस साके में जौहर रानी कर्मावती ने किया।

3. तीसरा साका

- तीसरा साका **1567-68 ई.** में मुगल बादशाह अकबर व फतेहसिंह सिसोदिया के बीच हुआ। इस साके में जौहर फूल कँवर ने किया।

प्रमुख दर्शनीय स्थल-

प्रमुख मंदिर-

- मीरा मंदिर, तुलजा भवानी मंदिर, कालिका माता का मंदिर, श्याम पार्श्वनाथ मंदिर, समद्धिश्वर मंदिर, कुम्भ श्याम मंदिर, सतबीश देवरी जैन मंदिर**,** शृंगार चंवरी जैन मन्दिर।

कीर्तिस्तम्भ/जैन प्रशस्ति-

- इसका निर्माण जैन व्यापारी जीजाशाह द्वारा करवाया गया है। कीर्ति स्तंभ प्रशस्ति की रचना **कवि अत्रि** तथा बाद में **महेश** द्वारा पूरी की गई।
- **विजय स्तम्भ** - दुर्ग के भीतर विजय स्तम्भ भव्य इमारत है।
- **उपनाम-** 'विष्णु स्तंभ' व 'भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोश।
- **निर्माण-** कुंभा ने **1437** ई. में '**सारंगपुर युद्ध**' में महमूद खिलजी प्रथम को पराजित किया**,** इस विजय के उपलक्ष्य में विजय स्तम्भ का निर्माण महाराणा कुम्भा द्वारा **1440** ई. से **1448** ई. करवाया गया।
- यह **9** मंजिला इमारत है जो **30** फीट चौड़ा और **122** फीट ऊँचा है। इसमें कुल **157** सीढ़ियाँ हैं। इसकी तीसरी मंजिल पर **9** बार अल्लाह शब्द लिखा है।
- **सी. वी. वैद्य** ने इसे '**विष्णु स्तंभ**' कहा है तथा **उपेंद्र नाथ डे** ने इसे '**विष्णु ध्वज**' कहा है।
- **गोपीनाथ शर्मा** ने इसे '**लोक जीवन का रंगमंच**' कहा है तथा **आर. पी. व्यास** ने इसे '**हिंदू प्रतिमा शास्त्र की अनुपम निधि**' कहा है।
- **महाराणा स्वरूप सिंह** के समय इसका **जीर्णोद्धार** करवाया गया। फर्ग्यूसन ने इसकी तुलना **'टार्जन टावर**' (**इंग्लैंड**) से की है।
- इसे बनाने की प्रेरणा **बयाना के विष्णु स्तंभ** से मिली।
- **जलापूर्ति के स्रोत -** रत्नेश्वर तालाब**,** कुम्भसागर**,** गोमुख झरना**,** हाथीकुण्ड**,** भीमलत तालाब**,** झालीबाव तालाब।

अन्य दर्शनीय स्थल-

- फतह प्रकाश महल।
- कल्ला राठौड़ की छतरी **(4** खम्भों की छतरी**)**।

- लाखोटा की बारी :- चित्तौड़ दुर्ग की उत्तरी खिड़की।
- रावत बाघसिंह का स्मारक।
- नवलखा बुर्ज (बनवीर द्वारा निर्मित लघु दुर्ग)।

कुम्भलगढ़ दुर्ग (राजसमंद)

- **निर्माण-** इस दुर्ग का निर्माण **महाराणा कुम्भा** ने **1448-1458** ई. में मौर्य शासक सम्प्रति द्वारा निर्मित एक प्राचीन दुर्ग के ध्वंसावशेषों पर **शिल्पी मंडन** की देखरेख में करवाया था।
- **श्रेणी-** मेवाड़ – मारवाड़ सीमा पर राजसमन्द जिले में स्थित **गिरि दुर्ग।**
- यह दुर्ग अरावली पर्वत की **13** ऊँची चोटियों से घिरा दुर्ग है, जो **36** किमी. लम्बे परकोटे से सुरक्षित है। इस दुर्ग की सुरक्षा दीवार इतनी चौड़ी है कि एक साथ **आठ घुड़सवार** चल सकते हैं।
- **उपनाम -** मेवाड़ की तीसरी आँख, मेवाड़ की संकटकालीन राजधानी, मत्स्येन्द्र, एस्ट्रूस्कन (**कर्नल टॉड**), कुंभलमेरु, कमलमीर आदि।
- **प्रवेश द्वार -** ओरठ पोल, हल्ला पोल, हनुमान पोल, विजय पोल, भैरव पोल, चौगान पोल, पागड़ा पोल और गणेश पोल। (**9** द्वार)

प्रमुख दर्शनीय स्थल-

- इस दुर्ग में झालीबाव बावड़ी, कुम्भास्वामी, विष्णु मंदिर, मामादेव तालाब, झाली रानी की मालिया आदि अन्य प्रसिद्ध स्मारक निर्मित हैं।
- '**उड़ना राजकुमार की छतरी-** कुंवर पृथ्वीराज की छतरी (**12** खम्भों की छतरी)।
- **कटारगढ़ -** कुम्भलगढ़ दुर्ग में स्थित लघु दुर्ग। कटारगढ़ में **महाराणा प्रताप का जन्म** हुआ था। राणा कुम्भा के पुत्र ऊदा ने कटारगढ़ में ही कुम्भा की हत्या की। कटारगढ़ में ही **झाली रानी का मालिया महल** बना हुआ है, इसे '**बादल महल**' भी कहा जाता है।
- इस दुर्ग में **नीलकंठ महादेव का मंदिर** तथा **यज्ञ की प्राचीन वेदी** है।

अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य-

- इसी दुर्ग से ही **महाराणा प्रताप ने हल्दीघाटी युद्ध की तैयारी** की थी।
- इस दुर्ग में ही **महाराणा उदय सिंह का राज्याभिषेक** हुआ था।
- इस दुर्ग की ऊँचाई के बारे में **अबुल फजल** ने लिखा है कि "यह इतनी बुलन्दी पर बना हुआ है कि नीचे से ऊपर की ओर देखने पर सिर से पगड़ी गिर जाती है।"

जालोर दुर्ग (सुवर्णगिरि दुर्ग)

- **उपनाम –** जाबालिपुर, जालनगर, सोनगढ़, जलालाबाद, सुवर्णगिरि, कनकाचल।
- **निर्माण -** डॉ. दशरथ शर्मा के अनुसार **नागभट्ट प्रथम** ने (730-756 ई.) **सूकड़ी नदी के किनारे** करवाया।
- दुर्ग का प्रथम प्रवेश द्वार '**सूरजपोल**' है, दूसरा ध्रुवपोल, तीसरा चाँदपोल व चौथा सिरपोल है।

दर्शनीय स्थल-

- **जल स्रोत-** झालर बावड़ी, सोहन बावड़ी व पापड़ बावड़ी स्थित है।
- **मंदिर-** जोगमाया माता मंदिर, चामुंडा माता मंदिर स्थित है।
- इस दुर्ग के सामने **नटनी की छतरी** स्थित है।
- **महल-** मानसिंह महल, रानी महल, नाथावत महल ।
- **अन्य दर्शनीय स्थल-** संत मलिक शाह की दरगाह, परमार कालीन कीर्ति स्तम्भ, 'स्वर्णगिरि' मंदिर (जैन मंदिर), तोपखाना मस्जिद, आशापुरा माता का मंदिर एवं वीरमदेव की चौकी।
- इस किले में बनी तोपखाना मस्जिद पूर्व में परमार शासक भोज द्वारा निर्मित संस्कृत पाठशाला थी।
- जालोर दुर्ग के बारे में **हसन निजामी** ने कहा कि "इस दुर्ग का दरवाजा कोई आक्रमणकारी अब तक नहीं खोल पाया।"

अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य-

- प्रतिहार नरेश **वत्सराज** के शासनकाल में **778** ई. में जैन **आचार्य उद्योतन सूरि** ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ **कुवलयमाला** की रचना की।
- **अलाउद्दीन खिलजी** ने कान्हड़देव के समय **1311-12** ई. में जालौर पर आक्रमण कर इस दुर्ग का नाम '**जलालाबाद**' रख दिया।

रणथम्भौर दुर्ग

- **उपनाम –** चित्तौड़गढ़ का छोटा भाई, दुर्गाधिराज, हम्मीर की आन-बान का प्रतीक आदि।
- **निर्माण-** ऐसी मान्यता है कि इस दुर्ग का निर्माण आठवीं शताब्दी में चौहान शासकों (**रणथम्मनदेव चौहान**) ने करवाया था।
- रणथम्भौर का प्राचीन नाम **रन्तःपुर** था, जिसका शाब्दिक अर्थ है **'रण की घाटी'।**
- रणथम्भौर का दुर्ग की **गिरि**, **एरण**, **वन तीनों श्रेणियों** का है।
- **प्रवेश द्वार -** नौलखा दरवाजा, हाथी पोल, गणेश पोल, सूरज पोल, त्रिपोलिया।

प्रमुख दर्शनीय स्थल-

- इस दुर्ग में **पीर सदरुद्दीन की दरगाह** है।
- राजस्थान का सबसे बड़ा **गणेश मंदिर** इस दुर्ग में ही स्थित है, जिसे **रणत भंवर/त्रिनेत्र गणेश मंदिर** के नाम से जानते हैं।
- रणथम्भौर दुर्ग में **32 खम्भों की छतरी** स्थित है, जिसका निर्माण **हम्मीरदेव चौहान** के पिता जयसिन्हा/जैत्रसिंह ने अपने शासनकाल में करवाया।
- **महल-** सुपारी महल, जौरा भौरा महल, हम्मीर महल, जोगी महल, हम्मीर कचहरी स्थित है।
  तालाब- रनिहाड़ तालाब, पद्मला तालाब।
- सुपारी महल (रणथम्भौर) में एक ही स्थान पर मन्दिर, मस्जिद और गिरजाघर स्थित है।

रणथम्भौर दुर्ग का साका-

- इस दुर्ग पर **11 जुलाई, 1301** को **अलाउद्दीन खिलजी** ने आक्रमण किया। हम्मीर विश्वासघात के परिणामस्वरूप लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ तथा उनकी पत्नी रंगदेवी ने जौहर किया, यह राजस्थान का **एकमात्र जल जौहर** था।

- **अबुल फजल** ने इस दुर्ग के बारे में कहा कि – "यह दुर्ग तो बख्तरबंद है बाकि दुर्ग नंगे है।"
- **जलालुद्दीन खिलजी** ने कहा कि मैं ऐसे 10 दुर्गों को मुसलमान के बाल के बराबर नहीं समझता।

आमेर दुर्ग

- **उपनाम –** हाथियों का किला, अम्बेवती दुर्ग, अम्बरीश दुर्ग, अम्बेपुर दुर्ग, अम्बिकापुर।
- **श्रेणी-** आमेर दुर्ग गिरि श्रेणी का है, जो काली खोह पहाड़ी पर स्थित है।
- **निर्माण व पुनर्निर्माण-** कोकिलदेव ने **1036** ई. में यह दुर्ग आमेर के मीणा शासक भुट्टो से छीन लिया। राजा मानसिंह प्रथम ने दुर्ग का पुनर्निर्माण करवाया।
- आमेर के महल **राजपूत व मुग़ल शैली** में निर्मित है।

प्रमुख दर्शनीय स्थल-

- इस दुर्ग में शीशमहल, शिला माता मंदिर, दीवाने आम, दीवाने खास, दिलखुश महल, **24** रानियों का महल, बुखारा गार्डन, **दिलाराम का बाग,** सुहाग मंदिर, यश महल आदि दर्शनीय स्थल हैं।
- **जगत शिरोमणि मंदिर-** यहाँ भगवान कृष्ण की काले पत्थर की मूर्ति लगी हुई है। यह मूर्ति आमेर के राजा मानसिंह-प्रथम द्वारा चित्तौड़ से लाई गयी थी। इस मंदिर का निर्माण महाराजा मानसिंह की पत्नी कनकावती द्वारा अपने दिवंगत पुत्र **जगतसिंह की याद में** करवाया गया था।
- आमेर दुर्ग में मिर्जा जयसिंह द्वारा **दीवान-ए-खास** का निर्माण करवाया गया, जिसमें राजा अपने विशिष्ट सामंतों व मुख्य व्यक्तियों से मिलता व दीवान-ए-आम में राजा के दरबार का आयोजन होता था।
- **सुख मंदिर -** दुर्ग में स्थित यह महल राजाओं का ग्रीष्मकालीन निवास था।
- आमेर दुर्ग के किनारे **मावठा झील** स्थित है।
- राजस्थान का एकमात्र दुर्ग जहाँ **मीणा बाजार** स्थित है।
- **विशप हैबर** ने कहा कि **"मैंने जो कुछ क्रेमलिन में देखा एवं अलब्रह्म के बारे में जो कुछ सुना उनसे कई ज्यादा बेहतर महल आमेर के महल है।"**
- 1707 ई. में मुगल बादशाह **बहादुरशाह प्रथम** ने आमेर का किला हस्तगत कर इसका नाम **मोमिनाबाद** रखा।

जयगढ़ (जयपुर)

- **उपनाम –** चिल्ह का टीला, शाही निवास, तोपों व सुरंगों का किला, रहस्यमयी दुर्ग, संकटमोचक दुर्ग।
  निर्माण :- मिर्जा राजा जयसिंह द्वारा।
- **परिवर्द्धनकर्ता :-** सवाई जयसिंह द्वितीय।
- **स्थान** :- चिल्ह का टीला (जयपुर) में स्थित गिरी दुर्ग।
- जयगढ़ दुर्ग में **जयबाण/रणबंका** तोप जो एशिया की सबसे बड़ी तोप है, जिसका निर्माण 1740 ई. में सवाई जयसिंह द्वारा करवाया गया।
- आमेर दुर्ग व जयगढ़ दुर्ग जय सुरंग से आपस में जुड़े हुए हैं।
- जयगढ़ दुर्ग में **आराम व सूर्य मंदिर** स्थित है।
- **दुर्ग के महल –** सुभट निवास महल, खिलवत महल, दिया बुर्ज 7 मंजिला महल (सबसे बड़ा बुर्ज) ।
- इस दुर्ग में **विजयगढ़ी महल** है, जिसे **लघु दुर्ग** कहते हैं।
- जयगढ़ दुर्ग में **चार बाग शैली का उद्यान** स्थित है।
- इस किले में **कठपुतलीघर** स्थित है।
- इस दुर्ग में कच्छवाहा राजाओं का राजकोष रखा हुआ था, श्रीमती इंदिरा गाँधी के प्रधानमंत्रित्व काल में गुप्त खजाने के लिए खुदाई की गई।

नाहरगढ़ दुर्ग (जयपुर)

- **उपनाम –** जयपुर मुकुट, मीठड़ी दुर्ग, सुदर्शनगढ़, जनाना क्वार्टर आदि।
- **निर्माण –** 1734 ई. में सवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा।
- **श्रेणी-** गिरि श्रेणी का है, जो मीठड़ी पहाड़ी पर स्थित है।
- नाहरगढ़ दुर्ग का निर्माण **मराठा आक्रांताओ से बचने** हेतु किया गया।
- **नामकरण -** नाहरसिंह भोमिया के नाम पर।

दर्शनीय स्थल-

- इस दुर्ग में **माधवेन्द्र भवन** है, जिसका निर्माण सवाई जयसिंह ने करवाया।
- इस दुर्ग में **नाहर सिंह भोमिया की छतरी** स्थित है।
- इस दुर्ग में **एक समान नौ महल** है, जो विक्टोरिया शैली में निर्मित है, जिनका निर्माण **महाराजा माधोसिंह द्वितीय** ने करवाया। (सुख महल, खुश महल, बसन्त महल, ललित महल, जवाहर महल, आनंद महल, प्रकाश महल, चांद महल, लक्ष्मी महल)
- नाहरगढ़ दुर्ग में भगवान भी कृष्ण का सुदर्शन चक्र लिए मंदिर स्थित है।
- सवाई जगतसिंह की प्रेमिका रसकपूर कुछ समय तक इसी किले में कैद करके रखी गई थी।

तारागढ़ (अजमेर)

- **उपनाम** – राजपुताना की कुंजी, अरावली का अरमान, राजस्थान का हृदय, गढ़ बीठली, राजस्थान का जिब्राल्टर।
- इस दुर्ग का प्रारम्भिक नाम **अजयमेरु दुर्ग** था।
- **निर्माण-** अजमेर जिले के इस दुर्ग का निर्माण 1113 ई. में अजयराज ने (**सातवीं शताब्दी में चौहान शासक अजयपाल ने, हरविलास शारदा के अनुसार)** ने तारागढ़ पर्वत की बीठली पहाड़ी पर करवाया।
- इसका प्रथम बार **जीर्णोद्धार उड़ना राजकुमार पृथ्वीराज सिसोदिया** ने करवाकर अपनी वीरांगना पत्नी तारा के नाम पर इसका नाम **तारागढ़** रखा।
- **बिशप हैबर** ने तारागढ़ दुर्ग को '**पूर्व का जिब्राल्टर**' की संज्ञा दी।
- **प्रवेश द्वार -** विजय पोल, लक्ष्मी पोल, फूटा दरवाजा, भवानी पोल, हाथी पोल, अरकोट दरवाजा।

दर्शनीय स्थल:

- **संत मीरान साहब की दरगाह** - इस दुर्ग के भीतर प्रसिद्ध मुस्लिम **संत मीरान साहब की दरगाह** है। यह दरगाह तारागढ़ के प्रथम गवर्नर मीर हुसैन खिंगसवार की है।

- **शीशाखान** - तारागढ़ पहाड़ी के ठीक नीचे अवस्थित प्राचीन गुफा।
- **बुर्ज-** इस दुर्ग की प्राचीर में **14** बुर्जे हैं, जिनमें घूँघट, गूगड़ी, फूटी बुर्ज, नक्कारची की बुर्ज, श्रृंगार चँवरी बुर्ज, पीपली बुर्ज, दौराई बुर्ज, फतेह बुर्ज आदि प्रमुख हैं।
- **जलाशय-** दुर्ग के भीतर नाना साहब का झालरा, इब्राहिम का झालरा एवं गोल झालरा आदि बड़े जलाशय विद्यमान हैं।
- प्रसिद्ध घोड़े की मजार इसी दुर्ग में स्थित है।
- रानी उमादे (रुठी रानी) जोधपुर शासक मालदेव की पत्नी थी, जिसने अंतिम दिनों में अपना जीवन इसी दुर्ग में बिताया था।
- राजस्थान का **प्रथम तरणताल** इस दुर्ग में बना।

मैग्जीन दुर्ग (अकबर का किला) अजमेर

- **निर्माण-** अकबर ने 1571-72 ई. में अजमेर नगर के मध्य अकबर के किला का निर्माण करवाया, जिसे मैगजीन दुर्ग भी कहते हैं।
- मैग्जीन दुर्ग के प्रवेश द्वार को **जहाँगीरी पोल** के नाम से जानते हैं।
- **अन्य नाम** - अकबर का दौलतखाना, मुगल किला।
- यह दुर्ग **धान्वन श्रेणी** का है।
- इस दुर्ग की **नींव संत दादूदयाल** ने रखी।
- 1576 ई. में **हल्दीघाटी युद्ध की योजना** इस दुर्ग में बनी थी।
- जहाँगीर ने सर टॉमस रो को भारत में व्यापार करने की अनुमति इस दुर्ग में दी।
- **वायसराय लॉर्ड कर्जन** द्वारा वर्ष 1905 में इस दुर्ग का जीर्णोद्धार करवाया।
- मैग्जीन दुर्ग राजस्थान का एकमात्र दुर्ग जो पूर्ण रूप से **मुग़ल शैली में निर्मित** है।
- वर्ष 1908 में **राजपुताना संग्रहालय** की स्थापना इसी दुर्ग में हुई, जिसके प्रथम अध्यक्ष हीरानंद ओझा बने।
- **1801** ई. में अंग्रेजों ने इस किले पर अधिकार कर इसे अपना **शस्त्रागार** (मैग्जीन) बना लिया।
- अकबर के पुत्र दनियाल तथा शाहजहाँ के पुत्र शहजादा शुजा का जन्म इसी किले में हुआ।

टॉडगढ़ (अजमेर)

- **निर्माण-** अजमेर जिले में स्थित यह दुर्ग **कर्नल जेम्स टॉड** द्वारा निर्मित है, जिन्हें राजस्थान के इतिहास का जनक और घोड़े वाले बाबा के नाम से भी जानते हैं।
- **गोपालसिंह खरवा और विजयसिंह पथिक** को इसी दुर्ग में कैद रखा गया था।
- वर्तमान में यहाँ जेल संचालित है।

गागरोण का दुर्ग (झालावाड़)

- दक्षिण-पूर्वी राजस्थान के सबसे प्राचीन व विकट दुर्ग में गागरोण दुर्ग भी **एक जल दुर्ग या औदुक दुर्ग** है, जो **कालीसिंध और आहु नदी** के संगम पर है, जो परमार शासकों द्वारा निर्मित। (**11**वीं सदी में)।
- **उपनाम -** डोडगढ, धुलरगढ़, शाहगढ़, गीधकगढ़।
- गागरोण का प्राचीन नाम **गर्गराटपुर** था।
- इसका नामकरण गागरोण **देवीसिंह खींची** ने किया।

दर्शनीय स्थल-

- इस दुर्ग में खुरासान से गागरोण आये सूफी संत '**मिट्ठे साहब की दरगाह**' तथा औरंगजेब द्वारा निर्मित **बुलन्द दरवाजा** भी स्थित है।
- इस दुर्ग में **संत पीपा की छतरी** है।
- इस दुर्ग में भगवान **मधुसूदन का मंदिर** तथा कोटा रियासत के सिक्के ढालने की टकसाल है।
- **जालिमकोट -** गागरोण दुर्ग में कोटा के झाला जालिमसिंह द्वारा निर्मित विशाल परकोटा।
- रामबुर्ज एवं ध्वज बुर्ज इसकी विशाल बुर्जे हैं।

इस दुर्ग में 2 साके हुए-

1. **प्रथम साका –** गागरोण के प्रथम साके का विवरण शिवदास गाडण कृत **'अचलदास खींची री वचनिका'** में मिलता है, जिसमें 1423 ई.में अचलदास खींची (भोज का पुत्र) और मांडू के **सुल्तान अलप खा गौरी (होशंगशाह)** के मध्य भीषण युद्ध हुआ, जिसमें अचलदास ने अपने बंधु बांधवों और योद्धाओं सहित शत्रु से जूझते हुए वीरगति प्राप्त की तथा उसकी रानी उमादे और लीला मेवाड़ी ने जौहर का नेतृत्व किया। अंत में दुर्ग का भार सहजादे जगनी खां को सौंपा गया।
2. **दूसरा साका –**1444 ई. में अचलदास के पुत्र **पाल्हनसी** का शासन काल में **महमूद खिलजी** के आक्रमण के समय हुआ। महमूद खिलजी ने विजय के बाद दुर्ग का नाम बदलकर **'मुस्तफाबाद'** रखा।

- अकबर ने गागरोण दुर्ग पृथ्वीराज को जागीर में दे दिया। पृथ्वीराज ने **'वेलि किसन रुक्मणी री'** ग्रन्थ गागरोण में ही लिखा।
- यह राज्य का एकमात्र दुर्ग है, जो बिना नींव के एक चट्टान पर सीधा खड़ा है।

लोहागढ़ दुर्ग (भरतपुर)

- **उपनाम –** राजस्थान का अजयदुर्ग, पूर्वी सीमा का प्रहरी।
- **महाराजा सूरजमल** द्वारा स्थापित भरतपुर दुर्ग का निर्माण 1733 ई. में सौगर के निकट प्रारंभ हुआ।
- लोहागढ़ दुर्ग **पारीख श्रेणी** का है।
- लोहागढ़ दुर्ग में **1805-06 ई.** में जसवंत राय होल्कर को शरण देने पर **लॉर्ड लेक** ने गोले दागे। लॉर्ड लेक ने इस दुर्ग को जीतने का पाँच बार असफल प्रयास किया।
- इस दुर्ग के चारों और गहरी खाई है जिसमें **मोती झील** से सुजान गंगा नहर द्वारा पानी लाया गया है।
- इस दुर्ग के प्रवेश द्वार पर लगा हुआ **अष्ट धातु दरवाजा** है, जिसे महाराजा जवाहरसिंह **1765 ई.** में दिल्ली में मुगलों से जीतने के बाद लाल किले से लाए थे।
- **लोहागढ़ दुर्ग के लिए कहावत है कि** – "8 फिरंगी 9 गोरे लड़े जाट के दो छोरे (दुर्जनशाल व माधोसिंह)"
- इस दुर्ग का **निर्माण मिट्टी** से किया गया।
- **मंदिर –** लक्ष्मण मंदिर (राजस्थान का एकमात्र मंदिर), बिहारी मंदिर।
- **महल –** वजीर कोठी, दादी माँ का महल, किशोरी महल, जवाहर बुर्ज आदि।

- **18** मार्च**, 1948** को **मत्स्य संघ का उद्घाटन** इसी दुर्ग में हुआ था।
- किले में **8** बुर्ज हैं**,** जिसमें **जवाहर बुर्ज एवं फतेह बुर्ज** प्रमुख हैं।
- लोहागढ़ दुर्ग पर 1826 ई. में अंग्रेजों ने अधिकार कर लिया।

बयाना दुर्ग (भरतपुर)

- **उपनाम –** रोणितपुर, बाणासुर, बादशाह दुर्ग, विजयमंदिर गढ आदि।
- यादव राजवंश के **महाराजा विजयपाल** ने अपनी राजधानी मथुरा को असुरक्षित जानकर यह दुर्ग माही (दमदमा) पहाडी पर बनवाया।
- **श्रेणी-** गिरि व वन दुर्ग।
- बयाना दुर्ग से सर्वाधिक **गुप्तकालीन मुद्राएँ** प्राप्त हुई हैं।
- बयाना दुर्ग में स्थित **उषा मंदिर** का निर्माण **चित्रलेखा** ने करवाया, जिसको मुबारक खिलजी ने तुड़वाकर **उषा मस्जिद** बनवाई।
- **भीम लाट (उषा लाट) -** यह दुर्ग के भीतर लाल पत्थरों से निर्मित **8** मंजिला ऊँची लाट है, इसे **राजस्थान की कुतुबमीनार** कहा जाता है। इसे **महाराजा विष्णुवर्द्धन** द्वारा बनवाया गया था।
- इस दुर्ग में समुद्रगुप्त द्वारा बनाया गया **विजय स्तम्भ** भी स्थित है।
- यहाँ लोदी मीनार, अकबर की छतरी, जहाँगीरी दरवाजा, सराय सादुल्ला **(1565** ई. में निर्मित**),** दाउद खाँ की मीनार दर्शनीय है।
- खानवा के युद्ध के बाद **बाबर** इसी दुर्ग में आया था।
- बयाना दुर्ग में **सर्वाधिक कब्रें** हैं।

डीग का किला

- **निर्माण –** बदन सिंह ने।
- दुर्ग के भीतर **सुरजमहल** स्थित है।
- इस दुर्ग के किनारे **जल महल** स्थित है।
- राजस्थान में जलमहलों की नगरी – डीग।

बाला किला (अलवर)

- **निर्माण –** अलघुराय।
- उपनाम : 52 दुर्गों का लाड़ला, आँख वाला किला।
- बाला किला में **सलीम महल, हैंगिंग महल व झूला महल** स्थित है।

भानगढ़ किला (अलवर)

- **निर्माण –** माधोसिंह ने 1631 ई. में करवाया।
- इस दुर्ग में **मेंहदी महल** स्थित है।
- यह दुर्ग सरिस्का अभयारण्य की सीमा के पास पहाड़ी पर स्थित है।
- वर्तमान समय में यह किला खंडर **आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया** द्वारा संरक्षित है।

कुचामन का किला

- इसे **'जागीरी किलों का सिरमौर'** कहा जाता है।
- इसका निर्माण **गौड राजपूतों द्वारा** करवाया गया।
- कुचामन के किले को **अणखला किला** भी कहते हैं क्योंकि इस किले का शत्रु सेना के सामने पतन नहीं हुआ।
- कुचामन एक मात्र जागीर थी, जिसकी स्वयं की मुद्रा इक्कतीसंदा थी।
- यह दुर्ग **'कुचबंधियों की ढाणी'** के नाम से जाना जाता था।

मांडलगढ़ दुर्ग (भीलवाड़ा)

- यह गिरि दुर्ग भीलवाड़ा जिले में **बनास, बेड़च व मेनाल** नदियों के संगम पर स्थित है।
- इस दुर्ग का निर्माण **मंडिया भील** द्वारा करवाया गया।
- यह दुर्ग **जल और ओदुक दुर्ग** श्रेणी का है।
- हल्दीघाटी युद्ध से पूर्व अकबर की सेना को इस दुर्ग में 21 दिन का सैन्य प्रशिक्षण दिया गया था।

अचलगढ़ दुर्ग (सिरोही)

- **निर्माण-** परमार शासकों द्वारा **9**वीं सदी में आबू **(**सिरोही**)** में निर्मित
- इस दुर्ग का पुनर्निर्माण **राणा कुंभा** ने करवाया।
- **श्रेणी-** गिरि दुर्ग।
- **प्रवेश द्वार -** हनुमान पोल**,** गणेश पोल**,** चम्पा पोल**,** भैरव पोल।
- **प्रमुख दर्शनीय स्थल-** अचलेश्वर महादेव मंदिर, मन्दाकिनी कुण्ड**,** सावन-भादो झील**,** ओखा रानी का महल आदि।
- **भंवराथल-** यहाँ आक्रमणकारी महमूद बेगड़ा एवं उसके सैनिकों पर मधुमक्खियों ने आक्रमण कर दिया था।
- इस दुर्ग के पास ही **भरथरी की गुफाएँ** हैं।

शेरगढ़ (बारां)

- इस दुर्ग का निर्माण **नागवंशीय शासकों** ने करवाया। उस समय इसका नाम **कोशवर्धन** था, परन्तु बाद में शेरशाह सूरी के नाम पर शेरगढ़ रखा गया।
- इस दुर्ग में **हनुहुन्कार तोप** रखी है।
- इस दुर्ग में **रावल महल** स्थित है।

नवलखा दुर्ग (झालावाड़)

- नवलखा दुर्ग का निर्माण 1860 ई. में झाला पृथ्वीसिंह द्वारा करवाया गया।
- एकमात्र दुर्ग जिसका निर्माण कार्य अभी तक जारी है।

भैंसरोडगढ़ दुर्ग

- कर्नल टॉड के अनुसार इस दुर्ग का निर्माण **भैंसाशाह** नामक व्यापारी तथा **रोड़ा चारण** ने पर्वतीय लुटेरों से अपने व्यापारिक काफिले की रक्षार्थ करवाया था ताकि वर्षा काल में यह दुर्ग उनका आश्रय स्थल बन सके।
- अरावली पर्वतमाला की विशाल घाटी में यह दुर्ग स्थित है जो **चम्बल व बामनी नदियों** के संगम स्थल पर स्थित तीनों ओर से प्रभूत जल राशि से घिरा है।
- इसे **'राजस्थान का वेल्लोर'** कहा जाता है।

तारागढ़ दुर्ग (बूँदी)

- **निर्माण -** राव बरसिंह द्वारा **1354** ई. में।
- **श्रेणी-** गिरि दुर्ग।
- **नामकरण-** धरती से आकाश के तारे के समान दिखलाई पड़ने के कारण तारागढ़।

- **प्रवेश द्वार -** हाथी पोल, गणेश पोल, हजारी पोल, पाटन पोल, भैरव पोल एवं शकल बारी दरवाजा।
- '**गर्भ गुंजन**' तोप इसी दुर्ग में रखी हुई है।
- **कर्नल जेम्स टॉड** ने बूँदी के राजमहलों को राजस्थान के सभी राजप्रासादों में सर्वश्रेष्ठ बताया है।
- **प्रमुख महल -** छत्र-महल, अनिरुद्ध महल, रतन-महल, बादल-महल, फूल महल।
- मेवाड़ महाराणा राणा लाखा ने इस दुर्ग को जीतने की प्रतिज्ञा पूर्ण न करने पर मिट्‌टी का नकली दुर्ग बनाकर उसे ध्वस्त करके अपनी कसम पूरी की।
- यहाँ स्थित **84** खम्भों की छतरी, शिकार बुर्ज, फूलसागर, जैतसागर और नवलसागर सरोवर बूँदी के वैभव को दर्शाते हैं।
- महाराव उम्मेदसिंह के काल में निर्मित **चित्रशाला** (**रंगविलास**) बूँदी चित्रशैली का उत्कृष्ट उदाहरण है।

सिवाणा दुर्ग

- **निर्माण -** परमार शासक वीर नारायण पंवार द्वारा **954** ई. में (10वीं सदी) में **हल्देश्वर पहाड़ी पर**।
- **श्रेणी-** गिरि दुर्ग, सहाय दुर्ग, कुमट दुर्ग।
- **प्रारम्भिक नाम -** कुम्थाना।

दुर्ग में 2 साके हुए –

1. **प्रथम साका - 1308** ई. में अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय, इस समय दुर्ग का रक्षक **सातलदेव सोनगरा** था। अलाउद्दीन खिलजी ने सिवाणा दुर्ग का नाम **खैराबाद** रखा था।
2. **द्वितीय साका -** अकबर ने मोटा राजा उदयसिंह के नेतृत्व में सिवाणा शासक **वीर कल्ला रायमलोत** पर आक्रमण किया। वीर कल्ला वीर गति को प्राप्त हुए तथा हाड़ी रानी ने सभी स्त्रियों के साथ जौहर किया।

- गिरि सुमेल युद्ध (**1544** ई.) के बाद राव मालदेव ने शेरशाह की सेना द्वारा पीछा किये जाने पर सिवाणा दुर्ग में पश्रय लिया था।
- यह दुर्ग मारवाड़ के शासकों की संकटकाल में शरणस्थली के रूप में प्रसिद्ध है।
- '**शेर-ए-राजस्थान**' नाम से विख्यात जयनारायण व्यास को इसी दुर्ग में बंदी बनाकर रखा गया।

दौसा किला

- **निर्माण-** दौसा जिले में देवगिरि पहाड़ी पर गुर्जर-प्रतिहारों (बड़गुर्जरों) द्वारा निर्मित।
- **श्रेणी-** गिरि दुर्ग।
- **आकार -** छाजले के समान।
- इस दुर्ग को **11**वीं सदी में कच्छवाहों ने बड़गुजरों से छीन लिया था।
- **प्रवेश द्वार** - हाथी पोल एवं मोरी दरवाजा।
- इस दुर्ग में प्रसिद्ध '**राजाजी का कुआँ**' तथा **बैजनाथ महादेव मंदिर** स्थित है।
- इस दुर्ग में '**14** राजाओं की साल' है।
- दादूपंथी नागा संप्रदाय के प्रवर्तक **सन्त सुन्दरदास जी** का जन्म स्थान माना जाता है।

नागौर दुर्ग

- **उपनाम -** अहिच्छत्रपुर दुर्ग, नागदुर्ग।
- **निर्माण -** विक्रम संवंत **1211** में कैमास (चौहान शासक सोमेश्वर का सामन्त) द्वारा
- **श्रेणी-** धान्वन दुर्ग और स्थल दुर्ग।
- यह दुर्ग वीर शिरोमणि **अमरसिंह राठौड़** के शौर्य एवं स्वाभिमान के लिए प्रसिद्ध है।
- **प्रवेश द्वार-** सिराई पोल, बिचली पोल, कचहरी पोल, सूरज पोल, धूपी पोल व राज पोल नामक 6 दरवाजे हैं।
- **शुक्र तालाब** - **1570** ई. में अकबर अजमेर में ख्वाजा साहब की जियारत करने के बाद नागौर आया तथा यहाँ पर लगभग दो महीने रहा। उसने यहाँ एक तालाब खुदवाया जिसका नाम **शुक्र तालाब** था।
- दुर्ग के भीतर बादल महल एवं शीश महल में **सुन्दर भित्ति चित्र** बने हैं।
- **मुख्य विशेषता-** इसके बाहर से चलाये गये तोपों के गोले किले के महलों को क्षति पहुँचाये बिना ही ऊपर से निकल जाते हैं।
- **दर्शनीय स्थल-** वीर अमरसिंह राठौड़ की छतरी, तारकीन की दरगाह, ज्ञानी तालाब, वंशीवाला का मंदिर, वरमाया का मंदिर, अन्न गोदाम।

चूरू का किला

- **निर्माण-** 1739 ई. में ठाकुर कुशालसिंह द्वारा
- इस दुर्ग में गोपीनाथ मंदिर दर्शनीय है।
- अपनी आजादी व अस्मिता के लिए इस दुर्ग में ठाकुर शिवसिंह ने गोले-बारुद खत्म होने पर दुश्मनों पर चाँदी के गोले दागे।

शेरगढ़ दुर्ग (धौलपुर)

- **निर्माण-** मारवाड़ के शासक राव मालदेव द्वारा निर्मित।
- **जीर्णोद्धार -** शेरशाह सूरी द्वारा
- **श्रेणी -** गिरि दुर्ग
- यह साम्प्रदायिक सद्भाव का जीता जागता नमूना है जिसमें एक तरफ सद्दीक खाँ का मकबरा तथा दूसरी तरफ हनुमानजी का मन्दिर है।
- शेरशाह सूरी द्वारा निर्मित सैय्यद की मजार इसी दुर्ग में है।
- अष्टधातु से निर्मित विशाल '**हुनहुंकार**' तोप इसी दुर्ग में है।

खण्डार का किला

- **निर्माण:** रणथम्भौर के चौहान वंशीय शासकों द्वारा **8**वीं – **9**वीं सदी में सवाईमाधोपुर से लगभग **40** किमी. पूर्व में निर्मित।
- **श्रेणी-** गिरि दुर्ग।
- **आकृति** - त्रिभुजाकार।
- यहाँ अष्टधातु निर्मित '**शारदा तोप**' अपनी मारक क्षमता हेतु प्रसिद्ध है।
- **प्रमुख जलाशय** - सता कुण्ड, लक्ष्मण कुण्ड, बाण कुण्ड, झिरी कुण्ड आदि।

तिमनगढ़ (त्रिभुवनगढ़)

- **निर्माण-** तहणपाल अथवा त्रिभुवनपाल द्वारा **11**वीं सदी में करौली में निर्मित गिरि दुर्ग।
- मुस्लिम आधिपत्य के बाद इस दुर्ग का नाम इस्लामाबाद कर दिया गया था।
- **दर्शनीय स्थल-** खास महल, ननद-भोजाई का कुआँ, राजगिरी, दुर्गाध्यक्ष के महल।

कोटा दुर्ग

- **निर्माण -** माधोसिंह द्वारा चम्बल नदी के किनारे ।
- **प्रवेश द्वार -** पाटन पोल, कैथूनी पोल, सूरज पोल, हाथी पोल एवं किशोरपुरा दरवाजा।
- **महल -** जैतसिंह महल, कँवरपदा महल, केसर महल, अर्जुन महल, चन्द्र महल, हवा महल।

सज्जनगढ़ दुर्ग

- **निर्माण-** उदयपुर की बांसदरा पहाड़ियों पर महाराणा सज्जनसिंह द्वारा।
  श्रेणी- गिरि दुर्ग।
- **उपनाम -** उदयपुर का मुकुटमणि।
- इस दुर्ग में महाराणा सज्जनसिंह द्वारा **1881** ई. में वाणी विलास पैलेस एवं गुलाबबाड़ी का निर्माण करवाया गया था।

अन्य दुर्ग

1. भोपालगढ़ दुर्ग
- **निर्माण-** खेतड़ी में तत्कालीन ठाकुर भोपालसिंह द्वारा **1770** ई. में।
- **उपनाम -** खेतड़ी का हवा महल।

2. बसन्तगढ़ दुर्ग
- **निर्माण-** सिरोही जिले में मेवाड़ महाराणा कुम्भा ने ।
- इस दुर्ग में **सूर्य मन्दिर एवं दत्तात्रेय का मंदिर** स्थित है।

3. राजोरगढ़ दुर्ग -
- टहला कस्बा (अलवर) में स्थित दुर्ग।

4. कांकणवाड़ी का दुर्ग -
- अलवर के सरिस्का वन्य जीव अभयारण्य के मध्य सघन और बीहड़ वन में महाराजा सवाई जयसिंह द्वारा निर्मित।

5. ऊंटगिरी का किला-
- **निर्माण -** लोधी राजपूतों द्वारा।
- यह दुर्ग कल्याणपुर (करौली) के पास स्थित है।
- **मुख्य प्रवेश द्वार -** इमली पोल।
- **अन्य नाम -** उदित नगर दुर्ग।

6. सोजत दुर्ग -
- राव जोधा के पुत्र नीम्बा द्वारा **15**वीं सदी में मेवाड़-मारवाड़ सीमा पर निर्मित गिरि दुर्ग। जोधपुर शासक राव मालदेव ने इस दुर्ग के चारों ओर विशाल एवं सुदृढ़ परकोटे का निर्माण करवाया।

7. माधोराजपुरा का किला -
- जयपुर में स्थित इस स्थल दुर्ग का निर्माण सवाई माधोसिंह प्रथम ने मराठा विजय के उपलक्ष्य में।

8. चौमू का किला -
- जयपुर के चौमू कस्बे में ठाकुर कर्णसिंह द्वारा (बेणीदास नामक साधु के आशीर्वाद से) निर्मित
- **अन्य नाम -** रघुनाथगढ़, धाराधारगढ़।

9. भूमगढ़/असीरगढ़ दुर्ग -
- टोंक में **17**वीं सदी में ब्राह्मण भोला द्वारा निर्मित।
- **उपनाम** :- दक्खन की चाबी।

10. फतेहपुर दुर्ग -
- **श्रेणी-** धान्वन व भूमि दुर्ग।
- **निर्माण -** 1453 ई. में फतन खाँ कायमखानी द्वारा।
- इस दुर्ग के भीतर '**तेलिन का महल**' बड़ा प्रसिद्ध है।

11. कोटकास्ता का किला -
- यह दुर्ग **जालौर में** अवस्थित है।
  इसे **'नाथों का दुर्ग'** भी कहा जाता है।

12. गुमट का दुर्ग -
- यह दुर्ग बाड़ी (धौलपुर) में स्थित है।

13. मनोहरथाना दुर्ग -
- यह **झालावाड़** में स्थित जल दुर्ग है।
- **निर्माता -** महाराव भीमसिंह (कोटा)।

14. सोढ़लगढ़ दुर्ग -
- यह **सूरतगढ़** (**श्रीगंगानगर**) में स्थित एक धान्वन दुर्ग है।
  निर्माण: बीकानेर नरेश सूरतसिंह द्वारा **1799** ई. में।

15. किलोणगढ़ दुर्ग -
- यह **बाड़मेर** में **1552** ई. में राव भीमोजी द्वारा निर्मित गिरि दुर्ग है।

16. ऊँटाला का किला -
- वल्लभगढ़ (उदयपुर) में स्थित दुर्ग।

17. नवल खाँ दुर्ग -
- झालावाड़ में स्थित दुर्ग।
  निर्माता :- झाला पृथ्वीसिंह।

18. काकोड़ दुर्ग -
- टोंक में स्थित दुर्ग।

19. तोहन दुर्ग -
- कांकरोली (राजसमन्द) में स्थित दुर्ग।

20. केहरीगढ़ दुर्ग -
- अजमेर में स्थित दुर्ग।

राजस्थान के प्रमुख दुर्ग : एक दृष्टि में		
दुर्ग	**निर्माता**	**उपनाम**
जैसलमेर	राव जैसल	सोनारगढ़, त्रिकुटगढ़, उत्तर भड़ किवाड़
जोधपुर	राव जोधा	मेहरानगढ़, मयूरध्वजगढ़, गढ़चिंतामणि
जालोर	प्रतिहार शासक	सुवर्णगिरि, सोनलगढ़, जाबालिपुर, कनकाचल
भरतपुर	सूरजमल	लोहागढ़, मिट्टी का किला
हनुमानगढ़	भाटी राजा भूपत	भटनेर दुर्ग, उत्तरी सीमा का प्रहरी
भैंसरोडगढ़	भैंसाशाह व्यापारी व रोडा चारण (बंजारा)	राजस्थान का वेल्लोर

चूरू	ठाकुर कुशालसिंह	चाँदी के गोले दागने वाला किला
अजमेर	अजयपाल	अजयमेरु, गढ़बीठली, तारागढ़, राजस्थान का जिब्राल्टर
चित्तौड़गढ़	मौर्य राजा चित्रांग (चित्रांगद)	चित्रकूट किला, गढ़ों का सिरमौर
कुम्भलगढ़ (राजसमन्द)	महाराणा कुम्भा	मेवाड़ की आँख, कुंभलमेरु, कुंभलमेर, माहोर
मैग्जीन (अजमेर)	अकबर	अकबर का किला, अकबर का दौलतखाना
गागरोण (झालावाड़)	डोड परमार राजाओं द्वारा निर्मित	धूलरगढ़, डोडगढ़
शेरगढ़ (धौलपुर)	मालदेव	दक्खिन का द्वार गढ़
जयगढ़ (जयपुर)	सवाई जयसिंह, मिर्जा राजा जयसिंह	चिल्ह का टिला
नाहरगढ़ (जयपुर)	सवाई जयसिंह II, सवाई रामसिंह II	सुदर्शनगढ़

नदियों के तट पर स्थित दुर्ग-

दुर्ग	जिला	नदी
गागरोण का दुर्ग	झालावाड़	कालीसिंध व आहू नदियों के संगम पर स्थित
चित्तौड़गढ़	चित्तौड़गढ़	गंभीरी व बेड़च नदियों के संगम पर स्थित
सुवर्णगिरि	जालोर	सूकड़ी
कोटा दुर्ग	कोटा	चम्बल

राजस्थान के दुर्गों पर आक्रमण

क्र.सं.	दुर्ग	समय	आक्रमणकारी	तत्कालीन शासक
1.	भटनेर दुर्ग (हनुमानगढ़)	1001 ई.	(i) महमूद गजनवी	-
		1398 ई.	(ii) तैमूर	-
		1570 ई.	(iii) अकबर	-
2.	रणथम्भौर दुर्ग (सवाईमाधोपुर)	1301 ई.	(i) अलाउद्दीन खिलजी	राणा हम्मीर देव चौहान
3.	गागरोण दुर्ग (झालावाड़)	1423 ई.	(i) होशंग शाह (मांडू सुल्तान)	अचलदास खींची
		1444 ई.	(ii) महमूद खिलजी	पाल्हणसी
4.	चित्तौड़गढ़ दुर्ग	1303 ई.	(i) अलाउद्दीन खिलजी	रावल रतनसिंह
		1534 ई.	(ii) बहादुरशाह	विक्रमादित्य
		1567-68 ई.	(iii) अकबर	उदयसिंह
5.	जैसलमेर दुर्ग	1312-13 ई.	(i) अलाउद्दीन खिलजी	रावल मूलराज
		1351-1388 ई. के मध्य	(ii) फिरोज तुगलक	रावल दूदा
		1550 ई.	(iii) अमीर अली (कंधार)	लूणकरण
6.	सुवर्णगिरि दुर्ग (जालोर)	1311	(i) अलाउद्दीन खिलजी	कान्हड़देव
7.	सिवाणा दुर्ग	1308 ई.	(i) अलाउद्दीन खिलजी	सातलदेव
8.	शेरगढ़ दुर्ग (धौलपुर)	1500 ई.	(i) बहलोल लोदी	-

अभ्यास प्रश्न

1. **वह दुर्ग जिसके चारों ओर खाई होती है, वह.... दुर्ग कहलाता है-**
(a) एरण (b) पारिख
(c) पारिधि (d) धन्वन

2. **अधोलिखित में से कौन-सा दुर्ग 'धान्वन दुर्ग' की श्रेणी में रखा जाता है?**
(a) चित्तौड़गढ़ दुर्ग
(b) गागरोण दुर्ग (झालावाड़)
(c) मेहरानगढ़ दुर्ग (जोधपुर)
(d) सोनारगढ़ (जैसलमेर)

3. **कौनसा एक प्रकार का पहाड़ी किला नहीं है?**
(a) मेहरानगढ़ (b) भैंसरोड़गढ़
(c) तारागढ़ (d) जालौर

4. **कौनसा जल दुर्ग नहीं है?**
(a) भटनेर (b) गागरोन
(c) भैंसरोड़गढ़ (d) कोशवर्द्धन

5. **औदक दुर्ग से अभिप्राय है?**
(a) गिरि दुर्ग (b) धान्वन दुर्ग
(c) सैन्य दुर्ग (d) जल दुर्ग

6. **स्थान, स्थापत्य और उपयोगिता के आधार पर किस प्रकार के दुर्ग, जल से घिरे हुए हैं-**
(a) गिरि दुर्ग (b) औदक दुर्ग
(c) ऐरण दुर्ग (d) सैन्य दुर्ग

7. तारागढ़ का किला किस प्रकार के दुर्ग का श्रेष्ठ उदाहरण है?
(a) औदक (b) गिरि
(c) जल (d) घन्वन

8. निम्न में से कौन-सा राजस्थान का गिरि दुर्ग नहीं है?
(a) गागरोण (b) जालौर
(c) चित्तौड़गढ़ (d) सिवाणा

9. निम्नलिखित में से कौनसा किला मरुस्थलीय किले की श्रेणी में आता है?
(a) जूनागढ़ (b) मेहरानगढ़
(c) गागरोण (d) नाहरगढ़

10. निम्नलिखित में से कौन-सा किला चौहान द्वारा बनवाया गया माना जाता है और जिस पर दिल्ली के शासक अलाउद्दीन खिलजी द्वारा कब्जा कर लिया गया था?
(a) आमेर का दुर्ग (b) रणथंभौर का किला
(c) चित्तौड़गढ किला (d) मेहरानगढ़ किला

11. हम्मीर रासो के अनुसार रणथम्भौर किले का प्रारंभिक नाम क्या था?
(a) रणस्तम्भपुर (b) रणदेवपुर
(c) रणथनपुर (d) रणथम्बपुरा

12. नाथावतों के इतिहास के अनुसार, बीहड़ वन में उच्च पर्वत शिखर पर बना हुआ वह कौन-सा दुर्ग है जो शिव-पिण्ड पर रखे बीलपत्र की तरह दिखाई देता है?
(a) रणथम्भौर का दुर्ग (b) अजयमेरु का दुर्ग
(c) जयगढ़ का दुर्ग (d) सिवाना का दुर्ग

13. राजस्थान का सबसे अधिक ऊँचा किला निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(a) चित्तौड़ (b) कुंभलगढ़
(c) आमेर/अंबर (d) जालौर

14. कुम्भलगढ़ दुर्ग के प्रमुख शिल्पी कौन थे?
(a) केषवदत्त (b) मण्डन
(c) चित्तवन (d) हेमचन्द्र

15. संकटकाल में कौन-सा दुर्ग मेवाड़ के राजपरिवार का आश्रय स्थल रहा है?
(a) कुंभलगढ़ (b) मचान
(c) अचलगढ़ (d) बसन्ती

16. झालीबाब बावड़ी और मामादेव का कुण्ड निम्न में से किस दुर्ग में स्थित है?
(a) चित्तौड़गढ़ (b) गागरोण
(c) कुम्भलगढ़ (d) तारागढ़

17. "यह एक ऐसा किला है जिसका दरवाजा कोई आक्रमणकारी नहीं खोल सका" हसन निजामी का यह कथन राजस्थान के किस किले के बारे में है-
(a) जैसलमेर का किला (b) तारागढ़ (बूंदी) किला
(c) चित्तौड़गढ़ का किला (d) जालौर का किला

18. गागरोण का किला किन दो नदियों के मध्य स्थित है?
(a) चम्बल और बैड़च (b) बनास और लूनी
(c) सूकड़ी और खारी (d) कालीसिन्ध और आहू

19. किस दुर्ग में मीठे शाह की दरगाह स्थित है?
(a) गागरोण (b) जालोर
(c) सिवाना (d) रणथम्भौर दुर्ग

20. 'गुब्बारा', 'नुसरत', 'नागपली', 'गजक' नाम है-
(a) मेवाड़ में प्रचलित राजस्व वसूली करों के नाम
(b) मेवाड़ में प्रचलित क्षेत्रीय मिठाईयों के नाम
(c) जोधपुर दुर्ग की तोपों के नाम
(d) मारवाड़ ठिकानों के वस्त्रों के नाम

21. बीकानेर के जूनागढ़ किले के दरवाजे पर किन शूरवीरों की मूर्तियाँ स्थित हैं?
(a) जयमल-पत्ता (b) राव दलपत-कर्णसिंह
(c) गोरा - बादल (d) भैरूजी – कल्लाजी

22. शाहजहाँ के बेटे दाराशिकोह का जन्म राजस्थान के किस दुर्ग में हुआ?
(a) तारागढ़ दुर्ग, अजमेर (b) तारागढ़ दुर्ग, बूँदी
(c) मेहरानगढ़, जोधपुर (d) सिवाणा दुर्ग, जालौर

23. निम्न में से किस किले का निर्माण रावल जैसल भाटी ने करवाया था?
(a) बीकानेर (b) भटनेर
(c) सोनार (d) रणथम्भौर

24. किस प्रसिद्ध दुर्ग की सुदृढ़ नैसर्गिक सुरक्षा व्यवस्था से प्रभावित होकर अबुल फजल ने लिखा कि "अन्य सब दुर्ग नग्न हैं, जबकि यह दुर्ग बख्तरबंद है'?
(a) रणथम्भौर (b) चित्तौड़
(c) मेहरानगढ़ (d) आमेर

25. सर्वोत्तम विलास, गज विलास, जवाहर निम्नलिखित में से किस दुर्ग में स्थित हैं?
(a) बाला किला (b) जालौर
(c) मेहरानगढ़ (d) सोनारगढ़

26. सुवर्णगिरी किस किले को कहते है?
(a) जैसलमेर का किला (b) जयगढ़ का किला
(c) चित्तौड़गढ़ का किला (d) जालौर का किला

27. निम्नलिखित में से कौन-सा किला सूकड़ी नदी के दाहिने किनारे पर बना हुआ है?
(a) सिवाणा का किला (b) जालौर का किला
(c) जैलसमेर का किला (d) गागरोण का किला

28. निम्न में से कौन-सा किला गढ़ बीठली के नाम से भी जाना जाता है?
(a) लोहागढ़, भरतपुर (b) तारागढ़, बूँदी
(c) तारागढ़, अजमेर (d) मेहरानगढ़, जोधपुर

29. 'नानासाहब का झालरा' और 'इब्राहिम का झालरा' जलाशय किस किले में अवस्थित है-
(a) तारागढ़ (अजमेर) (b) गागरोण दुर्ग (झालावाड़)
(c) बाला किला (अलवर) (d) भटनेर दुर्ग (हनुमानगढ़)

30. किस दुर्ग का सबसे ऊँचा भाग 'मीरान साहब की दरगाह' कहलाता है।
(a) रणथम्भौर (b) तारागढ़ (अजमेर)
(c) तारागढ़ (बूँदी) (d) जूनागढ़

31. गवर्नर जनरल लॉर्ड विलियम बैंटिंग ने किस दुर्ग को दुनिया का दूसरा जिब्राल्टर कहा है?
(a) मेहरानगढ़ (b) नाहरगढ़
(c) सिवाणा (d) तारागढ़

32. सलीम सागर एवं सूरजकुंड जल तड़ाग अवस्थित हैं-
(a) बाला किला, अलवर में (b) तारागढ़ किला, बूंदी में
(c) मेहरानगढ़, जोधपुर में (d) शेरगढ़ दुर्ग, बारां में

33. मयूराकृति होने के कारण राजस्थान के किस गढ़ को मयूरध्वज गढ़ कहा जाता है-
(a) मेहरानगढ़ (b) सोनारगढ़
(c) गागरोन (d) रणथम्भौर

34. औरंगजेब द्वारा निर्मित 'बुलंद दरवाजा' अवस्थित है-
(a) गागरोण किले में (b) जूनागढ़ किले में
(c) अचलगढ़ किले में (d) कुम्भलगढ़ किले में

35. बीकानेर के जूनागढ़ किले का निर्माण किसने करवाया?
(a) कामरान मिर्जा (b) राजा रायसिंह
(c) राव बीका (d) बाबर

36. 'किलकिला' तोप का संबंध किस दुर्ग से है?
(a) आम्बेर दुर्ग (जयपुर) (b) मेहरानगढ़ (जोधपुर)
(c) जूनागढ़ (बीकानेर) (d) चित्तौड़गढ़ दुर्ग

37. अलाउद्दीन खिलजी ने सिवाणा के किले को जीतकर उनका नाम क्या रखा?
(a) सुल्तानपुर (b) खैराबाद
(c) फिरोजाबाद (d) खिज्राबाद

38. अबुल फजल ने किस दुर्ग के बारे में लिखा कि "यह इतनी ऊँचाई पर स्थित है कि नीचे से ऊपर की ओर देखने पर सिर से पगड़ी नीचे गिर जाती है।"
(a) चित्तौड़गढ़ दुर्ग (b) कुम्भलगढ़ दुर्ग
(c) मेहरानगढ़ दुर्ग (d) रणथम्भौर दुर्ग

39. कोशवर्द्धन किले का प्रचलित नाम है?
(a) भटनेर का किला (b) विजय मन्दिर कला
(c) शाहबाद का किला (d) शेरगढ़ का किला

40. किस मुगल सम्राट ने कोटा महाराव भीमसिंह को पुरस्कार स्वरूप शेरगढ़ का किला प्रदान किया था?
(a) औरंगजेब (b) फर्रुखसियर
(c) शाहआलम (d) शाहजहाँ

41. चंबल नदी के तट पर निम्नलिखित में से कौन-सा किला स्थित है?
(a) नाहरगढ़ (b) आमेर
(c) शेरगढ़ (d) जयगढ़

42. चित्तौड़गढ़ दुर्ग का निर्माण कराया-
(a) चित्रांग मौर्य (b) बप्पा रावल
(c) कुम्भा (d) रतनसिंह

43. तिरिया, तेल, हम्मीर हठ, चढ़ ना दूजी बार' यह किस दुर्ग के शासक से सम्बन्धित है?
(a) रणथम्भौर (b) मेहरानगढ़
(c) चित्तौड़गढ़ (d) आमेर

44. चित्तौड़गढ़ दुर्ग के प्रथम द्वार, 'पाडन पोल' के पास बने चबूतरे पर निम्न में से किसका स्मारक बना हुआ है?
(a) जयमल राठौड़ (b) पत्ता सिसोदिया
(c) कल्ला राठौड़ (d) रावत बाघ सिंह

45. राजस्थान का वेल्लौर कौन-सा दुर्ग कहलाता है?
(a) कोशवर्द्धन (b) बसन्तगढ़
(c) भैंसरोड़गढ़ (d) त्रिभुवनगढ़

46. अचलगढ़ किले का निर्माण किसने किया?
(a) महाराणा कुंभा (b) मानसिंह
(c) रायसिंह (d) महाराणा प्रताप

47. पर्यटन स्थल अचलगढ़ स्थित है-
(a) उदयपुर (b) माउण्ट आबू (सिरोही)
(c) राजसमन्द (d) चित्तौड़गढ़

ANSWER KEY

1. [b]	2. [d]	3. [b]	4. [a]	5. [d]
6. [b]	7. [b]	8. [a]	9. [a]	10. [b]
11. [d]	12. [a]	13. [b]	14. [b]	15. [a]
16. [c]	17. [d]	18. [d]	19. [a]	20. [c]
21. [a]	22. [a]	23. [c]	24. [a]	25. [d]
26. [d]	27. [b]	28. [c]	29. [a]	30. [d]
31. [d]	32. [a]	33. [a]	34. [a]	35. [b]
36. [b]	37. [b]	38. [b]	39. [d]	40. [b]
41. [c]	42. [a]	43. [a]	44. [d]	45. [c]
46. [a]	47. [b]			

♦♦♦♦

मुश्किल परीक्षाएँ भी आसान लगेगी
जब तैयारी होगी लक्ष्य के साथ

लक्ष्य क्लासेज उदयपुर

तृतीय श्रेणी (3rd Grade)

अध्यापक भर्ती परीक्षा

LEVEL-I and LEVEL-II

(हिन्दी, ENGLISH, संस्कृत, सामाजिक अध्ययन, SCIENCE-MATH)

- COURSE OFFERED -

- NOTES WITH LIVE FROM CLASSROOM BATCH
- NOTES WITH RECORDED BATCH
- MCQ BASED BATCH
- TASK BASED TEST SERIES
- OFFLINE CLASSROOM BATCH

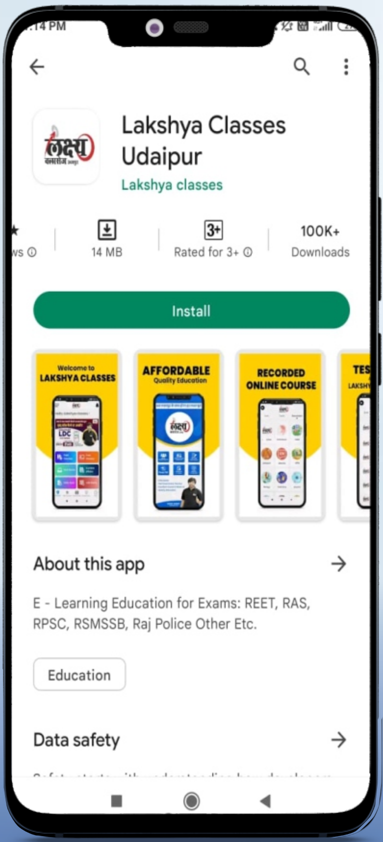

क्यों हैं लक्ष्य क्लासेज विशेष?

- व्यापक अध्ययन सामग्री
- MCQ की बुकलेट
- नियमित टेस्ट सीरीज
- पूर्णत: समर्पित यूट्यूब चैनल
- लाइब्रेरी सुविधा
- अनुभवी एवं योग्य फैकल्टी
- सुसज्जित स्मार्ट क्लासरूम
- ऑनलाइन एप्लीकेशन एक्सेस
- मासिक करंट अफेयर्स मैगज़ीन
- नियमित काउंसलिंग

Scan to Download Lakshya App Now
Google play

INSTAGRAM FACEBOOK YOUTUBE TELEGRAM

सफलता के पथ पर सबसे तेज उभरता हुआ संस्थान
लक्ष्य क्लासेज™

M. 9079798005, 6376491126
Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle, Main Road, Udaipur